जुलाई , 2023, वर्ष : 44 अंक : 07 www.indiatibet.net

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका

तिब्बत देश

परम पवन दलाई लामा और सिक्यांग पेंपा छेरिंग के साथ तिब्बती मुद्दों के लिए अमेरिकी विशेष समन्वयक सुश्री उजरा जेया और भारत में अमेरिकी राजदूत श्री एरिक गार्सेटी।

मूल्य :10 रू , वार्षिक : 100 रू

जुलाई, 2023, वर्ष : 44 अंक : 07

तिब्बत देश

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका पहली बार 1979 में प्रकाशित तिब्बत के बारे में सही जानकारी के साथ हर महीने आपके हाथो में

परम पवन दलाई लामा और सिक्योंग पेंपा छेरिंग के साथ तिब्बती मुद्दों के लिए अमेरिकी विशेष समन्वयक सुश्री उज़रा ज़ेया और भारत में अमेरिकी राजदूत श्री एरिक गार्सेटी ।

प्रधान संपादक
जमयंग दोरजी, थुप्तेन रिन्ज़ीन

सलाहकार संपादक
प्रो. श्यामनाथ मिश्र , डा. अतुल कुमार

प्रबंध संपादक
तेनजिन जोरदेन

वितरण प्रबंधक
छोन्यी छरिंग, ताशी देकि

संपादकीय एवं प्रकाशन कार्यालय :
भारत तिब्बत समन्वय केन्द्र
एच -१० लाजपत नगर -३
नई दिल्ली -११००२४, भारत

तिब्बत देश में प्रकाशित विचरों से संपादक, प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

इसमें प्रकाशित सामग्री का उपयोग अन्यत्र किया जा सकता है। कृपया तिब्बत देश का उल्लेख अवश्य करें ।

समाचार -

- 'विश्व शांति मन की शांति में निहित है' 1
- हिमाचल प्रदेश के लोगों के प्रति परम पावन ने सहानुभूति व्यक्त की 2
- परम पावन दलाई लामा की ८८वीं जयंती पर कशाग का वक्तव्य 3
- चीनी अधिकारी बाहरी दुनिया के साथ संपर्क को लेकर तिब्बतियों पर नज़र रखते हैं 4
- चीन ने अमेरिकी अधिकारियों के साथ दलाई लामा की मुलाकात का विरोध किया 5
- तिब्बत के महत्वपूर्ण धार्मिक आयोजन पर रोक, आयोजक हिरासत में 6
- तिब्बत की जेलों और हिरासत केंद्रों का 'रात की रोशनी के आंकड़ों' के आधार पर विश्लेषण 7
- कालोन नोरज़िन डोल्मा का पहला जापान दौरा संपन्न 8
- लैटिन अमेरिका स्थित तिब्बत कार्यालय ने परम पावन दलाई लामा के ८८वें जन्मदिन के अवसर पर एक महीने तक चलने वाली करुणा यात्रा शुरू की 9
- फ्रांसीसी सीनेट ने परम पावन दलाई लामा के ८८वें जन्मदिन की मेजबानी की 10
- भारत में तिब्बत समर्थक समूहों ने परम पावन १४वें दलाई लामा की ८८वीं जयंती मनाई 11

समाचार -

- कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज़- इंडिया की नई दिल्ली में महत्वपूर्ण बैठक 12
- सिएटल ds वी-टैग सदस्यों ने अमेरिकी कांग्रेस की सांसद किम श्रियर से मुलाकात की, यूएस-तिब्बत विधेयक के लिए समर्थन मांगा और तिब्बत में बिगड़ती स्थिति पर चर्चा की 13
- ताइवान स्थित तिब्बत कार्यालय के प्रतिनिधि ने नस्लीय भेदभाव के उन्मूलन पर राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग की प्रेस कॉन्फ्रेंस में भाग लिया 14
- टोक्यो विश्वविद्यालय में मंगोल-तिब्बत सांस्कृतिक और धार्मिक विषय पर संगोष्ठी 15

मुद्रक एवं प्रकाशक जमयांग दोरजी द्वारा प्रेम गुलाटी , डोली ऑफसेट प्रिंटर्स , डी -१५२ , एफ. एफ. सी. ओखला , नई दिल्ली -११००२० से मुद्रीत

तिब्बत के बारे में नियमित जानकारी के लिए भारत - तिब्बत समन्वय केन्द्र की वेबसाइट
www.indiatibet.net
Email:
indiatibet7@gmail.com

अपनी बात

◆ दलाई लामा को जन्मदिन की कृतज्ञतापूर्ण बधाई

परमपावन दलाई लामा के 88वें जन्म दिवस पर विष्व के विभिन्न देशो में अनेक कार्यक्रम आयोजित हुए। गत 06 जुलाई 2023 को आयोजित कार्यक्रमों में तिब्बती समुदाय एवं तिब्बत समर्थकों के साथ ही ऐसे स्थानीय लोग भी शामिल हुए जो चीन की विस्तारवादी तथा लोकतंत्र विरोधी नीति के विरोधी हैं। इससे स्पष्ट है कि साम्राज्यवादी चीन की दमनात्मक नीति का विरोध विष्व जनमत के लिये महत्वपूर्ण प्रश्न है। इस वर्ष भी दलाई लामा को जन्म दिन की बधाई दी गई। उनके दीर्घ जीवन हेतु प्रार्थना की गई। सभी ने कामना की कि वे सदैव स्वस्थ, तथा सक्रिय रहें। वे हमेशा अपने आध्यात्मिक उपदेष एवं प्रवचनों से समाज में मानवीय मूल्यों को मजबूत करते रहें।

दलाई लामा का जन्मदिन उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करने का अवसर होता है। चीन ने सन् 1959 में जब तिब्बत पर अवैध नियंत्रण कर लिया उस समय दलाई लामा तिब्बत के धर्मप्रमुख और राजप्रमुख दोनों थे। किसी अन्यदेष में नहीं जाकर उन्होंने भारत में शरण ली। वे अपने हजारों तिब्बती समर्थकों के साथ भारत आ गए। वे कहते हैं कि भगवान बुद्ध के विचार भारत से ही तिब्बत पहुँचे थे। प्राचीन नालंदा विश्यविद्यालय में तिब्बती अध्ययन करने आते थे। इस प्रकार वे भारत को तिब्बत का गुरु कहते हैं और तिब्बत को भारत का चेला। उनके अनुसार भारत एवं तिब्बत के संबंध गुरु-शिष्य संबंध हैं।

दलाई लामा का अपने गुरुगृह भारत में रहने का निर्णय सही सिद्ध हुआ। वे भारत को अपना दूसरा घर कहते हैं। वे गर्वपूर्वक और कृतज्ञता के साथ कहते हैं कि सन्1959 से ही भारत सरकार, विभिन्न प्रांतीय सरकारों तथा भारतीय जनता का भरपूर सहयोग एवं समर्थन लगातार मिल रहा है। इसके परिणामस्वरूप निर्वासन में रहकर भी तिब्बती अपनी संस्कृति, परंपरा तथा पहचान को बचाये हुए हैं। भारत स्थित तिब्बती षिक्षण संस्थान तथा अन्य आध्यात्मिक मठ-मंदिर इन्हें सुरक्षित रखे हुए हैं। भारत स्थित सभी तिब्बती सेटलमेंट अर्थात् आवासीय क्षेत्रों में कोई भी जाकर ऐसा देख सकता है। दलाई लामा को पूर्ण विष्वास है कि भारत सरकार और भारतीय लोगों का सहयोग-समर्थन भविष्य में जारी रहेगा। तिब्बती संघर्ष में तिब्बत का गुरु भारत हमेशा अपने शिष्य तिब्बत के साथ रहेगा।

गत 06 जुलाई 2023 को कृतज्ञता ज्ञापन की होड़ लगी थी। एक ओर तिब्बती समुदाय भारतीयों के प्रति कृतज्ञता प्रकट कर रहा था वहीं भारतीय लोग तिब्बतियों, विषेषकर दलाई लामा के प्रति कृतज्ञता ज्ञापितकर रहे थे। भारतीयों के अनुसार भारत में रहकर दलाई लामा भारतीय संस्कृति को मजबूत कर रहे हैं। उनकी प्रेरणा-प्रोत्साहन-आषीर्वाद से प्राचीन नालंदा परंपरा पुनर्जीवित हो गई है। तिब्बती शिक्षण संस्थानों में भारतीय बच्चे भी बड़ी संख्या में

अध्ययन कर रहे हैं।ये षिक्षण संस्थान संस्कृत के अनेक लुप्तप्राय ग्रंथों को पुनः प्रकाषित कर रहे हैं। ये भोटी के कई लुप्तप्राय ग्रंथों को संस्कृत में तथा संस्कृत के ऐसे लुप्तप्राय ग्रंथों को भोटी में उपलब्ध करा रहे हैं। ज्ञान-विज्ञान के नवीनतम क्षेत्रों में भी यहाँ उपयोगी साहित्य रचे जा रहे हैं। आधुनिकतम वैज्ञानिक उपकरणों, तकनीकों तथा शोध सामग्री का प्रयोग कर यहाँ लोककल्याणकारी साहित्य प्रकाषित-प्रचारित-प्रसारित किये जा रहे है। इस प्रकार दलाई लामा के आध्यात्मिक प्रवचनों से प्रेरित ये तिब्बती संस्थान प्राचीन भारतीय संस्कृति की नालंदा परंपरा को विश्व स्तर पर सुरक्षित-संवर्धित कर रहे हैं।

दलाई लामा के व्यक्तित्व-कृतित्व का आभारी संपूर्ण विश्व है। उनके जन्मदिन से जुड़े आयोजनों में विश्वभर के लोगों ने उन्हें शांति-अहिंसा का पुजारी कहा। विष्व के अनेक देशो की संसद को दलाई लामा संबोधित कर चुके हैं। कई देश उन्हें अपने सर्वोच्च नागरिक सम्मान प्रदान कर चुके हैं। विभिन्न राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय सम्मान-पुरस्कार प्राप्त दलाई लामा विष्व शांति के क्षेत्र में नोबल पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं। वास्तव में ये सभी सम्मान-पुरस्कार उन्हें विभिन्न संगठनों, संस्थाओं तथा देशो ने उनके योगदान के लिये प्रदान किये हैं।

दलाई लामा कहते है कि सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं मानवीय मूल्य। शांति, अहिंसा, करुणा, मैत्री, सहयोग तथा सद्भाव मानवीय मूल्य हैं। धार्मिक के साथ-साथ धर्मविरोधी एवं विधर्मी लोगों का काम भी इन मूल्यों के बिना नहीं चलेगा। ये सबके लिये समान रूप से जरूरी हैं। कोई किसी भी रिलिजन (पंथ, पूजा पद्धति, उपासना पद्धति, मजहब, मत, संप्रदाय) को माने उसे इन मूल्यों को महत्व देना ही होगा। इनके अभाव में समाज चल नहीं सकता। जहाँ तक रिलिजन की बात है, अपने रिलिजन केअनुरूप अपना आचार-विचार-व्यवहार रखो। साथ ही अन्य सभी रिलिजन का सम्मान करो। अपने रिलिजन को सर्वश्रेष्ठ तथा अन्य सभी रिलिजन को नीचा प्रमाणित करने के प्रयास ही मजहबी संघर्ष के कारण हैं। इससे बचने का उपाय है सर्वपंथसमादर भाव। दलाई लामा, जो कि स्वयं बौद्ध मतावलंबी हैं, अपने विभिन्न बौद्ध कार्यक्रमों में अन्य मतावलंबियों को बुलाते हैं। उनके कार्यक्रमों में सिक्ख, जैन, इसाई आदि अनेक मतावलंबी शामिल होते हैं। इसी प्रकार दलाई लामा स्वयं भी उन अन्य मतावलंबियों के कार्यक्रमों में जाते रहते हैं। यह है सर्वपंथसमादर भावका उदाहरण। यही है सेकुलर होने का प्रमाण।

दलाई लामा तिब्बती समुदाय द्वारा लोकतांत्रिक मतदान से निर्वाचित तिब्बत सरकार को अपने राजनैतिक अधिकार सौंप चुके हैं। इसके बावजूद विष्व समुदाय आश्वस्त है कि दलाई लामा की प्रेरणा से तिब्बती संघर्ष शांतिपूर्ण एवं अहिंसक रहेगा। इसीलिये विष्व समुदाय तिब्बती संघर्ष के साथ है ताकि उपनिवेशवादी चीन सरकार तिब्बत समस्या को शीघ्र निपटाये।

प्रो0 श्यामनाथ मिश्र
पत्रकार एवं अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, खेतड़ी (राजस्थान)

मो.-9079352370, 8764060406
E-mail & Facebook: - shyamnathji@gmail.com

◆'विश्व शांति मन की शांति में निहित है'

dalailama.com, ३१ जुलाई, २०२३

शेवात्सेल, लेह, लद्दाख, भारत, ३१ जुलाई २०२३। परम पावन दलाई लामा ३१ जुलाई की सुबह शेवात्सेल फोडरंग स्थित अपने आवास से प्रवचन स्थल के दूसरे छोर पर स्थित कालचक्र मंदिर तक गए। मंदिर के अंदर सैमटेन लिंग, स्पितुक, रिज़ोंग, लिकिर और ज़ांस्कर सहित कई स्थानीय मठों के भिक्षुओं का एक समूह कालचक्र अनुष्ठान का संचालन कर रहा था। इस समूह ने कालचक्र साधना समूह का गठन किया है। उनके सामने दीवार पर कालचक्र की एक पुरानी थांगका पेंटिंग लटकी हुई थी और मंडल मंडप में एक मंडल की तस्वीर रखी गई थी। परम पावन ने भिक्षुओं के साथ अपना स्थान ग्रहण करने और उनकी प्रार्थना में शामिल होने से पहले इन भिक्षुओं और बुद्ध की प्रतिमा को प्रणाम किया।

इसके बाद परम पावन ७० प्रतिनिधियों को संबोधित करने गए। ये प्रतिनिधि लेह में हाल ही में समाप्त हुई यू-सांग वार्षिक आम सभा की बैठक में शामिल होने आए थे। ये सब मंदिर के बरामदे पर बैठे। प्रार्थना होने के बाद आम सभा की लिखित रिपोर्ट पढ़ी गई।

इसमें कहा गया, 'तिब्बत के तीनों प्रांतों के हम तिब्बती महान धार्मिक राजाओं के समय से एकजुट रहे हैं। तिब्बत के राजा सोंगत्सेनगाम्पो ने एक चीनी राजकुमारी से विवाह किया और फिर जब उन्होंने तिब्बती लिपि बनाने का फैसला किया, तो उन्होंने भारतीय वर्णमाला पर के आधार पर इस लिपि का निर्माण करना चुना। वह दूरदर्शी और तिब्बती भावना से ओत-प्रोत व्यक्ति थे।

राजा त्रिसॉन्गडेट्सन के समय शांतरक्षित की सलाह पर भारतीय बौद्ध साहित्य का तिब्बती में अनुवाद करने के लिए एक परियोजना शुरू की गई। इसी परियोजना के परिणामस्वरूप हमारे पास मौजूद ३०० खंडों के कांग्यूर और तेंग्यूर ग्रंथों का प्रणयन किया गया है।

शांतरक्षित ने तिब्बत में गौरवशाली नालंदा परंपरा की स्थापना की और तब से हमने इसे जीवित रखा है। हमने इसे अच्छे से संरक्षित करके रखा है।'आज भी जब परंपरागत विचारों का मनोवैज्ञानिक और दार्शनिक व्याख्या की बात आती है तो तिब्बती सबसे सटीक भाषा के रूप से सामने आती है। अतीत के आचार्यों और राजाओं का अनुसरण करते हुए हमने शास्त्रीय ग्रंथों की सामग्री का अध्ययन, चिंतन और मनन करके परंपरा को जीवित रखा है। हम 'एकत्रित विषय' और 'मन और जागरुकता' से शुरुआत करते हैं, जिसे मैंने एक छोटे लड़के के रूप में याद किया था।

परम पावन ने आगे कहा, जब मैं बहुत छोटा था तब मुझे अपने जन्मस्थान के पास कुंबुम मठ जाने की घटना याद है। मैंने युवा भिक्षुओं को साष्टांग प्रणाम करते और ओम अरापत्सनाधि मंत्र का उच्चारण करते हुए देखा और उनकी नकल करना चाहता था।

शास्त्रीय ग्रंथों के गहन और व्यापक अध्ययन के परिणामस्वरूप अमदो, दो-तू और मध्य तिब्बत में अनेक महान विद्वान-विशेषज्ञों का समूह अस्तित्व में आया।

'हाल ही में हम कठिन दौर से गुजर रहे हैं, लेकिन तिब्बत के तिब्बतियों में विनम्रता की मजबूत भावना है। उन्होंने हमारी भाषा और संस्कृति को जीवित रखने के लिए कड़ी मेहनत की है। इसके अलावा, आज बौद्ध धर्म और विशेष रूप से तिब्बती बौद्ध धर्म में रुचि लेने वाले चीनियों की संख्या बढ़ रही है। लान्झू विश्वविद्यालय के छात्रों ने मुझे बताया कि चीनी अभी हम पर शासन कर सकते हैं, लेकिन दीर्घावधि में हम उन्हें पढ़ाएंगे। चीनी कम्युनिस्ट मुझे हर तरह के अपमानजनक नामों से बुलाते थे, लेकिन हाल ही में ऐसा लगता है कि उन्होंने इस तरह से विशेषण देना बंद कर दिया है।'

परम पावन ने कहा कि तिब्बती बौद्ध धर्म विज्ञान के अनुकूल है, क्योंकि यह तर्क और कारण के साथ-साथ अध्ययन, चिंतन और ध्यान की प्रक्रिया पर आधारित है। उन्होंने कहा कि चीन और यूरोप में बढ़ती संख्या में लोग बिना किसी धार्मिक प्रतिबद्धता के इस परंपरा पर ध्यान दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि यह उन्हें उस बात की याद दिलाता है जो जेसोंगखापा ने अपने 'ज्ञानोदय के पथ के चरणों पर महान ग्रंथ' के अंत में लिखी थी।

जहां कहीं भी बुद्ध की शिक्षा नहीं फैली है
और जहां भी यह फैली, लेकिन कम फैली है

मैं अत्यधिक करुणा से प्रेरित होकर स्पष्ट रूप से बता सकता हूं कि यह सभी के लिए उत्कृष्ट लाभ और खुशी का खजाना है।

उन्होंने कहा कि अतीत में तिब्बती बौद्ध धर्म केवल नाम से जाना जाता था, लेकिन अब बड़े पैमाने पर लोगों को इसकी व्यापक समझ है, क्योंकि शिक्षित लोग और वैज्ञानिक इसमें रुचि लेते हैं।

परम पावन ने आगे कहा, 'तिब्बती बौद्ध धर्म नालंदा परंपरा और नागार्जुन, चंद्रकीर्ति, धर्मकीर्ति और दिङ्नाग के लेखन से निकला है। हमने एक ऐसी संस्कृति विकसित की है जिसका दुनिया में लाभकारी योगदान है। ऐसे कारणों से हमें तिब्बती होने पर गर्व हो सकता है।

'इन दिनों बहुत से लोग विश्व शांति के बारे में बात करते हैं, लेकिन यह तभी संभव होगा जब हममें से अधिक से अधिक लोगों के दिलों में प्यार और करुणा होगी। विश्व शांति मन की शांति में निहित है। दलाई लामा नाम के साथ मैं कई अलग-अलग जगहों पर गया हूं और इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि हमें अपनी सांस्कृतिक परंपराओं पर गर्व हो सकता है। इसका कारण यह है कि विश्व शांति आंतरिक शांति प्राप्त करने पर निर्भर करती है।

'आप सभी को सहज महसूस करना चाहिए। मेरी उम्र लगभग ९० वर्ष है, लेकिन मैं फिट महसूस करता हूं और मेरे डॉक्टर भी ऐसा ही कहते हैं। मेरे सपनों में संकेत और अन्य स्रोतों से पता चलता है कि मैं ११० वर्ष से अधिक जीवित रहूंगा।'

पहले उत्संग प्रतिनिधि और फिर कालचक्र समूह के भिक्षु परम पावन के साथ तस्वीरें लेने के लिए उनके आसपास एकत्र हुए।

शेवात्सेल से परम पावन कार से चलकर स्टोक गांव और वहां की विशाल स्वर्ण बुद्ध प्रतिमा तक पहुंचे। सड़क पर स्थानीय लोग सज-धज कर, हाथों में फूल, रेशमी स्कार्फ और चेहरों पर मुस्कान लिए कतार में खड़े थे। उनमें से कुछ सड़क के किनारे सजाने के लिए जेरेनियम और अन्य फूलों के गमले लेकर आए थे।

परम पावन के उपर रंग-बिरंगा पीला रेशमी छाता तानकर उन्हें तेज़ धूप से बचाया गया। उन्होंने महान प्रतिमा के नीचे से मंदिर में प्रवेश किया जहां उन्होंने श्रद्धांजलि अर्पित की और घी का दीपक जलाया। इसके बाद, उन्होंने शुभकामना के प्रतीक के रूप में फूलों को हवा में उछाला और मूर्तियों, मालाओं और अन्य वस्तुओं को पवित्र करने के लिए प्रार्थना की, जिन्हें पवित्र करने के लिए रखा गया था।

मंदिर के बरामदे में कुर्सी पर बैठ कर परम पावन प्रार्थना में शामिल हुए। स्टोक के लोगों के प्रवक्ता गेशेत्सेवांगदोर्जे ने सबसे पहले अपने स्वागत भाषण में कहा कि वे आज वह उनका स्वागत करके बहुत खुश महसूस कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि २०१६ से जब बुद्ध की महान प्रतिमा का निर्माण किया गया था, तब से वे हर साल कांग्यूर और तेंग्यूर को एक साथ पढ़ते हैं। उन्होंने ऐसे केंद्र भी बनाए हैं, जहां वे बौद्ध धर्म का अध्ययन कर सकते हैं और एक साथ तिब्बती भाषा सीख सकते हैं।

आज जो बुजुर्ग हो चुके हैं वे अब तक इस तरह का अध्ययन नहीं कर सकते थे। उन्होंने अब इस पाठ और प्रार्थनाओं को सीख लिया है। ऐसी अध्ययन केंद्र हैं, जहां लोग बौद्ध धर्म और विज्ञान का अध्ययन करते हैं। प्रत्येक चंद्र माह की १५ और ३० तारीख को स्टोक के ग्रामीण परम पावन और अन्य महान लामाओं की लंबी उम्र के लिए प्रार्थना करने के लिए इकट्ठा होते हैं।

प्रवक्ता ने आगे कहा, हालांकि वे सिर्फ प्रार्थना नहीं कर रहे हैं। वे परम पावन की सलाह के अनुसार 'पथ के चरणों' (लैमरिम) और 'माइंड ट्रेनिंग' (लोजोंग) के बारे में भी सीखते हैं। उन्होंने आज प्रतिमा का दौरा करने के लिए परम पावन को धन्यवाद देते हुए अपनी बात समाप्त की। इसके बाद ढोल- बाजे के साथ परम पावन की प्रशंसा में एक गीत और नृत्य की प्रस्तुति हुई।'

परम पावन ने उपस्थित जनसमूह से कहा, 'जब मैं शेवात्सेल फोडरंग में होता हूं और ऊपर देखता हूं तो दूर इस महान प्रतिमा को देखता हूं, मुझे ऐसा लगता था कि मैं इसे देखने जा रहा हूं। और आज हम यहां हैं।

'दुनिया के महान धर्मों के संस्थापक शिक्षकों में केवल बुद्ध ने प्रतीत्य-समुत्पाद के बारे में सिखाया, जो कि गहन शिक्षा है। जहां तक मेरा सवाल है, मैं समझता हूं कि चूंकि यह शिक्षा परस्पर निर्भरता से उत्पन्न हुई हैं, इसलिए चीजें अंतर्निहित अस्तित्व से खाली हैं।'

'हम अलग-अलग चीज़ों से आसक्त या विमुख हो जाते हैं, क्योंकि हमें लगता है कि वे स्वाभाविक रूप से या वस्तुगत रूप से अस्तित्व में हैं। वे हमें एक निश्चित रूप में दिखाई देते हैं, जो वास्तव में केवल एक भ्रम है।

नागार्जुन ने लिखा है:
कर्म और मानसिक वेदनाओं के नाश से मुक्ति मिलती है।
कर्म और मानसिक क्लेश मानसिक विचार से आते हैं।
ये मानसिक उलझनों से आते हैं।
शून्यता से ये उलझनें बंद हो जाती हैं। १८.५

'मध्यम मार्ग का उद्देश्य हमारे मानसिक कष्टों को कम करना और आत्मज्ञान प्राप्त करना है। मैं हर दिन जितना संभव हो सके शून्यता पर विचार करता हूं। हालांकि, केवल अपनी मुक्ति के बारे में सोचना संकीर्ण रूप से आत्म-केंद्रित होना है।

'बोधिसत्व का मार्ग' हमें बताता है:

जो लोग दूसरों के दुखों को देखकर अपनी खुशी का त्याग नहीं करते हैं, उनके लिए बुद्धत्व प्राप्त करना निश्चित रूप से असंभव है – जीवन-मरण के चक्र में खुशी कैसे हो सकती है? ८/१३१

'हम सभी को करुण हृदय विकसित करना चाहिए और स्वार्थ से दूर रहना चाहिए। खुश रहने की चाहत में हम सभी एक जैसे हैं, इसलिए हमें सभी की खुशी की चिंता करनी चाहिए।

'यहां बुद्ध की इस महान प्रतिमा के समक्ष, जिसे दूर से देखा जा सकता है,

हमें बुद्ध की हमारे प्रति करुणा- उनकी शिक्षाओं को याद रखना चाहिए और उनके प्रति आभारी होना चाहिए।'

'लद्दाख और हिमालय क्षेत्र के अन्य हिस्सों के लोग बुद्ध के अनुयायी हैं जो विशेष रूप से अवलोकितेश्वर को मानते हैं, मणियों का पाठ करते हैं और बोधिचित्त पर ध्यान करते हैं, जिससे मन को शांति मिलती है।

'जब मैं हर सुबह उठता हूं तो मैं बोधिचित्त उत्पन्न करता हूं और ओम मणिपद्मे हुम् का जाप करता हूं। हर कोई खुश रहना चाहता है, लेकिन दुनिया में इतनी हिंसा और वेदनाएं है। जब हममें से प्रत्येक को मन की शांति मिलेगी तो हम व्यापक शांति लाने में सक्षम होंगे।

'बौद्ध धर्मग्रंथ न केवल इस जीवन के बारे में बल्कि अतीत और भविष्य के जीवन के बारे में भी शिक्षा देते हैं। यदि आपका दिल अच्छा है और आप अवलोकितेश्वर पर भरोसा करते हैं तो आप एक शांतिपूर्ण जीवन जीएंगे और कई प्राणियों के लिए लाभकारी होंगे।

'बौद्ध धर्म केवल बुद्ध, धर्म और संघ में विश्वास रखने के बारे में नहीं है। यह हमारे दिमाग को बदलने के बारे में है। बुद्ध ने यही सिखाया। मैं सभी धर्मों का सम्मान करता हूं, क्योंकि वे सभी अच्छे दिल की कामना करते हैं। बौद्ध धर्म हमें सिखाता है कि इसे कैसे विकसित किया जाए और इसकी साधना कैसे की जाए।

'बौद्ध धर्म केवल आस्था का विषय नहीं है, इसमें दार्शनिक विचारों की विस्तृत व्याख्या शामिल है। यही कारण है कि हमें अध्ययन करने, जो हमने सीखा है उस पर चिंतन करने और अनुभव प्राप्त होने तक उस पर मनन करने की आवश्यकता है। यही तो मैं आपको बताना चाहता था।'

स्टोक ग्रामीणों की ओर से गेशेत्सेवांगदोर्जे ने परम पावन को अपने गांव में उनकी दूसरी बार यात्रा के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने दोहराया कि स्टोक के लोग परम पावन की सलाह के अनुसार एक साथ 'मणियों' का अध्ययन और पाठ कर रहे हैं। उन्होंने कहा, वे यह भी प्रार्थना करते हैं कि परम पावन बार-बार लद्दाख आएं।

बुद्ध की महान प्रतिमा से परम पावन स्टोक के ऊपर की ओर लद्दाख की पूर्व रानी स्टोक ग्याल्मो के निवास तक गए, जहां रानी और उनके पोते ने उन्हें चाय पर आमंत्रित किया था। बगीचे में उनके लिए छाया में बैठने के लिए एक छोटा वर्गाकार तंबू लगाया गया था और चाय और जलपान परोसे जाने के दौरान उन्होंने साथ- साथ हल्की बातचीत का आनंद लिया।

रानी के परिवार के सदस्य और अन्य शुभचिंतक रास्ते के दोनों ओर बैठे थे। जब परम पावन अपनी कार की ओर जा रहे थे, तो वे लोग उनके करीब होने की उम्मीद से आगे बढ़े। बदले में उन्होंने मुस्कुराकर उनका अभिवादन किया। स्टोक से वह सिंधु नदी पर बने पुल के पार चोशोटयाकमा से होते हुए आगे बढ़े और शेवात्सेल फोडरंग लौट आए।

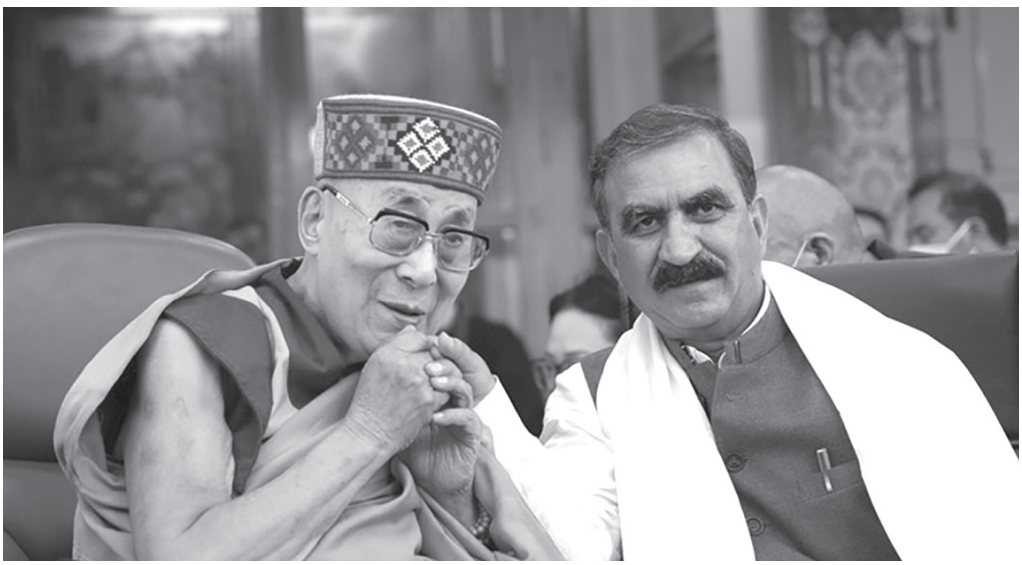

◆ हिमाचल प्रदेश के लोगों के प्रति परम पावन ने सहानुभूति व्यक्त की

dalailama.com, १२ जुलाई, २०२३

शेवात्सेल फोडरंग, लेह, लद्दाख, भारत। परम पावन दलाई लामा ने आज १२ जुलाई को हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर बताया है कि मूसलाधार बारिश के कारण बाढ़ और भूस्खलन के कारण कई लोगों की दुखद मौत हो गई है, यह जानकर उन्हें कितना दुख हुआ है। उत्तर भारत, विशेष कर हिमाचल प्रदेश में लोगों और सड़कों तथा बुनियादी ढांचे को गंभीर क्षति पहुंची।

परम पावन ने लिखा, 'छह दशकों से अधिक समय तक इस राज्य में इतनी खुशी से रहने के बाद मैं यहां के लोगों को लेकर विशेष आकर्षण महसूस करता हूं।'

'मैं उन लोगों और उनके परिवारों के लिए प्रार्थना करता हूं, जिन्होंने अपनी जान गंवाई, अपने प्रियजनों को खोया और इस प्राकृतिक आपदा से प्रभावित हुए। मैं इन लोगों और परिवारों के प्रति भी अपनी हार्दिक संवेदना व्यक्त करता हूं।'

'मैं समझता हूं कि राज्य सरकार और अन्य एजेंसियां राहत प्रदान करने और इस त्रासदी के प्रभावों को कम करने के लिए हरसंभव प्रयास कर रही हैं। हिमाचल प्रदेश के लोगों के साथ मेरी एकजुटता के प्रतीक के रूप में दलाई लामा ट्रस्ट बचाव और राहत प्रयासों के लिए दान दे रहा है।'

परम पावन ने प्रार्थनाओं और शुभकामनाओं के साथ अपना पत्र समाप्त किया।

◆ परम पावन दलाई लामा की ८८वीं जयंती पर कशाग का वक्तव्य

tibet.net, ०६ जुलाई, २०२३

परम पावन महान चौदहवें दलाई लामा के ८८वें जन्मदिन के शुभ अवसर पर कशाग तिब्बत के अंदर और बाहर के तिब्बती लोगों की ओर से परम पावन दलाई लामा को हमारी गहरी श्रद्धांजलि और शुभकामनाएं देना चाहता है। हम आज यहां उपस्थित सभी विशिष्ट अतिथियों और दुनिया भर में इस महत्वपूर्ण दिन का जश्न मनाने वाले सभी लोगों का हार्दिक स्वागत करते हैं।

आज का दिन जश्न मनाने का एक विशेष दिन है और एक खुशहाल जीवन और अधिक शांतिपूर्ण दुनिया बनाने की दिशा में परम पावन दलाई लामा के अद्वितीय नेतृत्व और विरासत को कृतज्ञता और गर्व के साथ प्रतिबिंबित करने का भी है।

तिब्बत में अमदो क्षेत्र के कुंबुम के एक छोटे से गांव में जन्मे परम पावन दलाई लामा ने ल्हासा में तिब्बत के दलाई लामाओं की पारंपरिक पीठ के सिंहासन पर आरूढ़ हुए। परम पावन दलाई लामा ने विद्वानों की विशाल सभा के बीच बौद्ध दर्शन में सर्वोच्च डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। सोलह वर्ष की छोटी उम्र में परम पावन दलाई लामा ने तिब्बत के आध्यात्मिक और राजनीतिक नेतृत्व को संभाला और सामाजिक सुधार लाने की पहल की। हालांकि, पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना के आक्रमण और कब्जे ने तिब्बत को विनाश के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया। इस कारण परम पावन दलाई लामा को निर्वासन की राह पर चलने के लिए मजबूर होना पड़ा।

पिछले साल के कशाग के बयान में परम पावन दलाई लामा के गंभीर नेतृत्व और विरासत की झलक मिली, खासकर तिब्बती लोगों के प्रति, जिसमें तिब्बत के उचित उद्देश्य की प्राप्ति और तिब्बती राष्ट्रीय पहचान के संरक्षण के लिए निर्वासित केंद्रीय तिब्बती प्रशासन की स्थापना भी शामिल थी।

इस अवसर पर हमने वैश्विक स्तर पर परम पावन दलाई लामा की अहम

मेधावी सेवाओं के एक अंश को उजागर करने का प्रयास किया है। परम पावन दलाई लामा ने १९६७ में जापान और थाईलैंड के बौद्ध देशों की अपनी पहली यात्रा की। १९७३ में यूरोप के ११ देशों की अपनी पहली यात्रा के दौरान परम पावन दलाई लामा ने दृढ़ता से इस बात पर जोर दिया कि भौतिक विकास के साथ-साथ, चाहे कोई आस्तिक हो या नास्तिक, सार्वभौमिक जिम्मेदारी विकसित करने और एक अच्छा दिल विकसित करने की आवश्यकता है।

परम पावन दलाई लामा ने १९७९ में अमेरिका के २४ शहरों और ४० से अधिक विश्वविद्यालयों और धार्मिक केंद्रों का दौरा किया, जिससे पश्चिमी समाज के साथ उनका सीधा संपर्क स्थापित हुआ। उस समय परम पावन दलाई लामा ने एक सामान्य दृष्टिकोण विकसित करने, दुनिया की विभिन्न धार्मिक परंपराओं के बीच सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व बनाए रखने और एक अहिंसक दृष्टिकोण को शामिल करने की आवश्यकता पर जोर दिया, जो वैश्विक चुनौतियों का मुकाबला कर सके और एक अधिक करुणामय दुनिया का निर्माण कर सके।

यह सर्वविदित है कि परम पावन दलाई लामा की पश्चिमी विज्ञान में गहरी रुचि रही है जो उनके बचपन से ही मशीनों के प्रति उनकी गहरी जिज्ञासा से स्पष्ट है। १९७९ में परम पावन दलाई लामा ने यूरोप में डेविड बोहम जैसे प्रसिद्ध भौतिकविदों के साथ बातचीत शुरू की और १९८४ में एम्हर्स्ट कॉलेज में मनोविज्ञान, तंत्रिका विज्ञान, पारंपरिक चिकित्सा और पारिस्थितिकी के विशेषज्ञों के साथ इस तरह की और बातचीत हुई।

१९८७ में धर्मशाला आवास पर परम पावन दलाई लामा ने पश्चिमी वैज्ञानिकों के साथ बैठक के बाद २०२२ तक लगातार ३५ अभूतपूर्व मन और जीवन सम्मेलन में भाग लिया। प्रतीत्य- समुत्पाद के बौद्ध विज्ञान और अहिंसा की बौद्ध परंपरा पर आधारित परम पावन दलाई लामा तीन दशकों से अधिक समय तक आधुनिक वैज्ञानिकों के साथ भारत की प्रतीत्य- समुत्पाद की नालंदा परंपरा और आधुनिक विज्ञान के तुलनात्मक अध्ययन में लगे रहे। इससे वैज्ञानिक ज्ञान में अभूतपूर्व वृद्धि हुई।

इन संवादों में वैज्ञानिक तर्क और बौद्ध तत्वमीमांसा के बीच समानता खोजने, क्वांटम फीजिक्स और बिना किसी स्वतंत्र अस्तित्व वाली सभी घटनाओं और मन के माध्यमिका सिद्धांत के बीच समानताएं खोजने की

कोशिश केवल बाहरी वास्तविकता के अस्तित्व को नकारने के लिए है। बौद्ध दृष्टिकोण के बीच ब्रह्मांड के आदी-अंत को लेकर मतभेद और बिग बैंग (महाविस्फोट) सिद्धांत की वैज्ञानिक अवधारणा, डार्विन के विकासवाद और पारिस्थितिकी के सिद्धांत के आधार पर जीवन के विकास पर स्पष्टीकरण, पौधों और फूलों में चेतना के आधार यह जांच करना कि क्या उनमें वस्तुओं की स्थिति को समझने की क्षमता है- जैसे विषयों पर विचार होता रहा है। बौद्ध धर्म ने आधुनिक विज्ञान में न्यूरोलॉजी और मनोविज्ञान में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

परम पावन दलाई लामा ने इस बात पर जोर दिया है कि करुणा किसी भी वैज्ञानिक अनुसंधान की आधारशिला होनी चाहिए ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि इसके परिणाम संवेदनशील प्राणियों और पर्यावरण के लिए नुकसान का कारण नहीं बनेंगे। परम पावन दलाई लामा की वैज्ञानिकों के साथ बातचीत से न केवल उनके धर्म के वैज्ञानिक दृष्टिकोण में बदलाव आया है, बल्कि दुनिया भर में अनुसंधान के वैज्ञानिक क्षेत्र का क्षितिज भी व्यापक हुआ है। इसी तरह, माइंड एंड लाइफ डायलॉग्स ने चिंतनशील परंपरा को अध्ययन के एक वैध क्षेत्र के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य- दोनों के लिए इस परंपरा के लाभों को समझने में लाखों लोगों को आकर्षित किया है।

पिछले पचास वर्षों में तिब्बती बौद्ध धर्म न केवल एक धर्म के रूप में, बल्कि बौद्ध विज्ञान और संस्कृति के भंडार के रूप में भी दुनिया भर में फला-फूला जो पिछले १४०० वर्षों से चला आ रहा था। कुछ वैज्ञानिक यह विचार व्यक्त कर रहे हैं कि बौद्ध विज्ञान को प्राकृतिक विज्ञान और सामाजिक विज्ञान के साथ-साथ विज्ञान की एक शाखा के रूप में मान्यता दी जानी चाहिए।

दिल और दिमाग की शिक्षा पर एमोरी विश्वविद्यालय के साथ परम पावन दलाई लामा के सहयोग के परिणामस्वरूप सामाजिक, भावनात्मक और नैतिक शिक्षा (एसईई लर्निंग) की अवधारणा विकसित हुई, जिसे अब १३० से अधिक देशों में प्रचारित किया जा रहा है। इसने शिक्षा के लिए एक नई दिशा प्रशस्त की है। जैसा कि एमोरी यूनिवर्सिटी ने कहा है, 'एसईई लर्निंग वर्तमान और भविष्य के लिए एक अभिनव शिक्षा प्रणाली है, जिसे व्यक्तिगत और सामाजिक स्तर पर लागू किया जा रहा है। यह करुणा का विज्ञान, जागरुकता का विकास और जुड़ाव के उपकरण प्रदान करती है। इस शिक्षा प्रणाली ने राज्य, राष्ट्र और आस्था से बंधे हुए सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों के विकास के माध्यम से संपूर्ण मानवता के लिए खुशहाल जीवन की पवित्र विधि की पेशकश की है।

दुनिया भर में यात्रा करते हुए परम पावन दलाई लामा ने पिछले कुछ वर्षों में पांच महाद्वीपों के लगभग ६० देशों का दौरा किया है। इनमें से परम पावन दलाई लामा ने अकेले अमेरिका का लगभग ६० बार, जर्मनी का ४७ बार, जापान का ४३ बार, स्विट्जरलैंड का ३२ बार, इटली का ३१ बार और फ्रांस का २६ बार दौरा किया है। परम पावन दलाई लामा की यात्राओं के दौरान सभागारों, स्टेडियमों और सार्वजनिक पार्कों में भारी भीड़ उमड़ती रही है। अब तक परम पावन दलाई लामा ने लगभग ५०० अंतरराष्ट्रीय दौरे किए हैं और लगातार बुद्धिजीवियों, वैज्ञानिकों और आम जनता से मुलाकात की है। परम पावन दलाई लामा ने लगभग ५०० वैश्विक राजनीतिक और धार्मिक नेताओं से भी मुलाकात की। परम पावन दलाई लामा की मानवता के प्रति सराहनीय सेवा को देखते हुए सरकारों, संसदों, संस्थानों और फाउंडेशनों ने उन्हें २०० से अधिक मानद डॉक्टरेट की उपाधि दी है और अनेक पुरस्कार प्रदान किए हैं, जिनमें अकेले अमेरिका में लगभग ७३ पुरस्कार शामिल हैं।

परम पावन दलाई लामा ने १९८७ में अमेरिकी कांग्रेस में पांच सूत्री शांति योजना का प्रस्ताव रखा और १९८८ में स्ट्रासबर्ग में यूरोपीय संसद में मध्यम-मार्ग दृष्टिकोण के अपने विचार पर विस्तार से प्रकाश डाला। २००८ में तिब्बती लोगों के लिए वास्तविक स्वायत्तता पर एक ज्ञापन चीनी सरकार के समक्ष प्रस्तुत किया गया। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन मध्यम मार्ग नीति के आधार पर बातचीत के माध्यम से चीन-तिब्बत संघर्ष को हल करने के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध है।

मानवीय मूल्यों का प्रणयन, धार्मिक सद्भाव को बढ़ावा, तिब्बती धर्म, संस्कृति और पर्यावरण की सुरक्षा और प्राचीन भारतीय ज्ञान के पुनरुद्धार पर परम पावन दलाई लामा की चार प्रमुख प्रतिबद्धताओं को कुछ पैराग्राफों में पर्याप्त रूप से व्याख्यायित नहीं किया जा सकता है। परम पावन दलाई लामा सामान्यतः विश्व और विशेष रूप से तिब्बतियों के लिए आश्रय और प्रेरणास्रोत हैं।

तिब्बत के संरक्षक देवताओं के शुभ विवेक और परम पावन दलाई लामा द्वारा बार-बार दिए गए आश्वासन के अनुसार, प्रत्येक तिब्बती को परम पावन दलाई लामा के दृष्टिकोण को साकार करने की दिशा में काम करना, उनकी लंबी आयु और समृद्धि सुनिश्चित करना अपना पवित्र कर्तव्य समझना चाहिए। निरर्थक विभाजनकारी क्षेत्रवाद और संप्रदायवाद को त्यागकर उनकी सराहनीय सेवाओं के द्वारा तिब्बती लोगों के बीच एकता कायम करना और मौजूदा वैश्विक स्थिति के तहत तिब्बत के उचित मुद्दे को साकार करने के सुनहरे अवसरों का लाभ उठाना अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह परम पावन दलाई लामा के जन्मदिन के सम्मान में एक वास्तविक भेंट और श्रद्धांजलि होगी। इसलिए कशाग प्रत्येक तिब्बती से अपील करता है कि वह हमारे सामान्य उद्देश्य के सामने आने वाले अवसरों और खतरों का विवेकपूर्वक आकलन करे।

इस अवसर का लाभ उठाते हुए कशाग परम पावन दलाई लामा की सुरक्षा और देखभाल की जिम्मेदारी लेने के लिए भारत की केंद्र और राज्य सरकारों की गहरी सराहना करता है और धन्यवाद देना चाहता है। हम उन सभी को भी धन्यवाद देते हैं जिनका परम पावन दलाई लामा के वैश्विक दृष्टिकोण और नेतृत्व में अटूट विश्वास और भक्ति है।

अंत में, कशाग परम पावन दलाई लामा की लंबी आयु और उनकी सभी इच्छाओं की पूर्ति के लिए प्रार्थना करता है। कशाग परम पावन दलाई लामा की पोटाला पैलेस में शीघ्र वापसी और तिब्बत के अंदर और बाहर के तिब्बतियों के पुनर्मिलन के लिए भी उत्साहपूर्वक प्रार्थना करता है। तिब्बत की सच्चाई की जल्द ही जीत हो और दुनिया भर में शांति का प्रकाश फैले।

कशाग

◆ चीनी अधिकारी बाहरी दुनिया के साथ संपर्क को लेकर तिब्बतियों पर नज़र रखते हैं

tibet.net, ०१ जुलाई २०२३

आरएफए को पता चला है कि तिब्बत में चीनी अधिकारियों ने तिब्बतियों की निगरानी बढ़ा दी है और तिब्बत के बाहर के लोगों के साथ संपर्क को रोकने के लिए क्षेत्रीय राजधानी ल्हासा में उनसे पूछताछ की जा रही है।

चीनी सरकार तिब्बतियों पर निगरानी बढ़ा रही है और ल्हासा में रहने वाले तिब्बतियों से पूछताछ की जा रही है, ताकि यह पता लगाया जा सके कि क्या उन्होंने तिब्बत के बाहर के लोगों से संपर्क किया है? इस तरह के संपर्कों को रोकने के लिए निगरानी उपाय बढ़ा दिए गए हैं। अब चीनी अधिकारी ल्हासा में तिब्बतियों को विशेष रूप से निशाना बनाकर उनसे पूछताछ कर रहे हैं और उन्हें संचार बंद करने की चेतावनी दे रहे हैं।

मार्च में आयोजित हुए दो प्रमुख वर्षगांठों के कारण पुलिस को निगरानी बढ़ाने का मौका मिल गया। इस महीने में २००८ की जनक्रांति की १५वीं बरसी और एक दशक पहले इस क्षेत्र पर आक्रमण करने वाले चीनी सैनिकों के खिलाफ १९५९ की जनक्रांति की ६४वीं बरसी पड़ती है।

लेकिन मार्च से लागू की गई कड़ी सुरक्षा जून तक जारी रही और पुलिस ने ल्हासा में निवासियों की बारीकी से निगरानी करना और उनके सेल फोन और ऑनलाइन संचार की औचक तलाशी जारी रखी है, ताकि यह पता लगाया जा सके कि क्या उन्होंने विदेशों से भी संपर्क किया था?

एक तिब्बती निवासी ने आरएफए की तिब्बती सेवा को बताया कि पुलिस विशेष रूप से चिंतित है कि ल्हासा निवासी तिब्बत के बाहर पत्रकारों या शोधकर्ताओं के संपर्क में हो सकते हैं।

सूत्र ने कहा, 'तिब्बतियों को चेतावनी दी जा रही है कि वे बाहर के लोगों से संपर्क न करें और जिन्होंने संपर्क किया है, उन्हें बुलाया गया है और पूछताछ की गई है। उनके सेल फोन जब्त कर लिए गए हैं और उनकी लगातार जांच की जा रही है।'

स्रोत उन लोगों में से था, जिन्होंने तिब्बत के बाहर के लोगों से संपर्क किया

था और उसे कुछ दोस्तों के साथ पूछताछ के लिए बुलाया गया था।

सूत्र ने कहा, 'उन्होंने हमें कभी भी बाहरी लोगों, खासकर तिब्बत के शोधकर्ताओं और पत्रकारों से संपर्क न करने की चेतावनी दी। मैं यह भी जानता हूं कि तिब्बत के बाहर के लोगों से संपर्क करने वाले कई अन्य तिब्बतियों से भी चीनी अधिकारियों ने पूछताछ की थी।'

एक अन्य निवासी ने कहा कि बाहरी लोगों के साथ अनौपचारिक बातचीत के लिए भी लोगों को बुलाया जा सकता है।

दूसरे निवासी ने कहा, 'मुझे इस साल पूछताछ के लिए पहले ही दो बार बुलाया गया था और मेरे एक दोस्त को मुझे दूसरी बार रिहा करने के लिए अधिकारियों को रिश्वत देनी पड़ी। मेरा नाम अब पूछताछ किए गए लोगों में सूचीबद्ध है, इसलिए अगर मुझे ल्हासा से बाहर यात्रा करने की ज़रूरत है तो मुझे स्थानीय पुलिस से अनुमति लेनी होगी।'

◆ चीन ने अमेरिकी अधिकारियों के साथ दलाई लामा की मुलाकात का विरोध किया

tibet.net, ११ जुलाई २०२३

बीजिंग ने बैठक को चीन के आंतरिक मामलों में 'हस्तक्षेप' बताया, दलाई लामा का कहना है कि चीन ने उन्हें बातचीत के लिए संदेश भेजे हैं।

- द हिंदू

चीन ने सोमवार १० जुलाई को दलाई लामा और 'केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए)' के अधिकारियों के साथ अमेरिकी अधिकारी उज़रा ज़ेया की दिल्ली में हुई बैठक का विरोध किया और इसे चीन के आंतरिक मामलों में 'हस्तक्षेप' करने का प्रयास बताया।

सुश्री ज़ेया के साथ बैठक से पहले दलाई लामा ने कहा कि तिब्बती 'स्वतंत्रता' नहीं चाहते हैं और वह चीनी सरकार के साथ बातचीत के लिए तैयार हैं। दलाई लामा शनिवार ०८ जुलाई को दिल्ली पहुंचे। उन्होंने कहा कि चीन ने उनके पास फीलर या विचारक भेजे हैं।

नागरिक सुरक्षा, लोकतंत्र और मानवाधिकारों के लिए अमेरिकी अवर सचिव और तिब्बती मुद्दों के लिए अमेरिकी विशेष समन्वयक सुश्री उज़रा ज़ेया ने एक सप्ताह के हिस्से के रूप में रविवार शाम को तिब्बती नेता और

धर्मशाला स्थित सीटीए के अधिकारियों से मुलाकात की। उनका आगे भारत और बांग्लादेश की लंबी यात्रा और दोनों राजधानियों में सरकारी अधिकारियों और नागरिक समाज के कार्यकर्ताओं से मिलने का कार्यक्रम है।

पिछले सप्ताह सुश्री ज़ेया ने दलाई लामा के ८८वें जन्मदिन के अवसर पर 'वाशिंगटन स्थित तिब्बत कार्यालय' द्वारा आयोजित जन्मदिन समारोह में भी भाग लिया था।

भारत में चीनी दूतावास की प्रवक्ता ने तिब्बत के लिए तैनात चीनी सरकार के आधिकारी के नाम का जिक्र करते हुए एक बयान में कहा, 'ज़िज़ांग (तिब्बत) मामले पूरी तरह से चीन के आंतरिक मामले हैं और किसी भी बाहरी ताकतों को हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं है। चीन विदेशी अधिकारियों और 'तिब्बती स्वतंत्रता' बलों के बीच किसी भी प्रकार के संपर्क का दृढ़ता से विरोध करता है।

चीन ने इसी तरह मई २०२२ में दलाई लामा से मिलने के लिए सुश्री ज़ेया की धर्मशाला यात्रा का विरोध किया था और २०२१ में बिडेन प्रशासन द्वारा 'तिब्बती मुद्दों पर विशेष समन्वयक' पद के सृजन का विरोध किया था।

◆ तिब्बत के महत्वपूर्ण धार्मिक आयोजन पर रोक, आयोजक हिरासत में

Savetibet.org, २६ जुलाई २०२३

पूर्वोत्तर तिब्बत में चीनी पुलिस ने कई दिनों तक चलने वाले एक महत्वपूर्ण बौद्ध अनुष्ठान- कालचक्र दीक्षा समारोह को रोक दिया और आयोजकों को हिरासत में लेकर इसमें हस्तक्षेप किया है।

अनुष्ठान के लिए तैयार एक रेत मंडल को नष्ट कर दिया गया है और पुलिस कार्रवाई का विरोध करने वाले भक्तों को कथित तौर पर पीटा गया और उन्हें अपने घरों को लौटने के लिए कहा गया। उनमें से कुछ दूर-दराज के स्थानों से आए थे।

तिब्बत के लिए अंतरराष्ट्रीय अभियान (आईसीटी)ने कहा, 'वह सोल्हो प्रान्त में कालचक्र पर प्रतिबंध के बारे में गहराई से चिंतित हैं, क्योंकि अधिकारियों का हस्तक्षेप साफ तौर पर बल प्रयोग के द्वारा प्रवचन, साधना, पूजा और धर्म या विश्वास प्रकट करने के अधिकार का उल्लंघन दर्शाता है।' हालांकि चीनी अधिकारियों द्वारा सूचना पर रोक के कारण आईसीटी स्वतंत्र रूप से रिपोर्टों की पुष्टि नहीं कर सका, लेकिन आईसीटी का मानना है कि घटनाएं अत्यधिक संभावित हैं। चीनी अधिकारियों को तिब्बती बौद्धों के धर्म की स्वतंत्रता के अधिकार को बहाल करना चाहिए और कालचक्र जैसे कार्यक्रमों को अनुचित सरकारी हस्तक्षेप के बिना आयोजित करने की अनुमति देनी चाहिए।'

कालचक्र

कालचक्र (समय का पहिया) तिब्बती बौद्ध धर्म में एक प्रमुख प्रथा है और इसे २०-२३ जुलाई को किंघई प्रान्त के सोल्हो (चीनी: हैनान) तिब्बती स्वायत्त प्रिफेक्चर के मंगरा (चीनी: गिनीन) काउंटी के गुमोंग शहर के सामी-शि गांव में आयोजित किया जाना था।

इसका नेतृत्व सोल्हो प्रिफेक्चर स्थित अथी मठ के प्रमुख अनुष्ठान गुरु अथिकालसांगताशीग्यात्सो रिनपोछे को करना था। लोकप्रिय रूप से अथी रिनपोछे के नाम से जाने जानेवाले अनुष्ठान गुरु क्षेत्र के लोग्या, सोनक, जोसेर और रनगोन गांवों में रहने वाले लगभग २००० परिवारों के मुख्य गुरु हैं।

समारोह शुरू होने से एक दिन पहले १९ जुलाई को दीक्षा-पूर्व संस्कार के दौरान तैयारी रोक दी गई थी, जबकि कथित तौर पर कार्यक्रम को अधिकारियों द्वारा पहले ही मंजूरी दे दी गई थी।

सूत्रों के अनुसार, चीनी अधिकारियों का एक बड़ा समूह सशस्त्र पुलिस के साथ १९ जुलाई की सुबह कार्यक्रम स्थल पर पहुंचा और रेत मंडल को नष्ट करके और अथी रिनपोछे को छोड़ने के लिए मजबूर करके दीक्षा प्रक्रिया को रोक दिया।

अधिकारियों ने आयोजकों को पूछताछ के लिए हिरासत में ले लिया और विनती कर रहे श्रद्धालुओं की भीड़ को धक्का देकर पीटा और मंडली को अपने-अपने घरों में लौटने का आदेश दिया।

वीडियो वायरल

चीन के आधिकारिक सेंसर द्वारा जांचे जाने से पहले जनता द्वारा अथी रिनपोछे के स्वागत के वीडियो को सोशल मीडिया पर व्यापक रूप से प्रसारित किया गया था।

सूत्रों का कहना है कि वीडियो के व्यापक प्रसार ने संभवतः केंद्र सरकार का ध्यान बौद्ध धर्म के प्रभाव की ओर आकर्षित किया होगा, जिसके कारण धार्मिक आयोजन को रोकने का आदेश जारी करना पड़ा।

यह स्पष्ट नहीं है कि किस कानून के आधार पर कार्यक्रम को रोका गया।

आध्यात्मिक शिक्षा का अभिन्न अंग

ऐसी शिक्षाएं तिब्बती बौद्ध समुदाय में आध्यात्मिक शिक्षा का एक अभिन्न अंग हैं। वे उन व्यक्तियों के लिए भी आवश्यक हैं जो अपनी आध्यात्मिक साधना को उच्चतम स्तर तक आगे बढ़ाना चाहते हैं।

यही कारण है कि जब निर्वासन में दलाई लामा द्वारा कालचक्र दीक्षा प्रदान की जाती है तो कई भक्त एकत्रित होते हैं। कालचक्र की विशेषता वास्तविक दीक्षा से कुछ दिन पहले व्यापक तैयारी है, विशेष रूप से एक रेत मंडल जो दीक्षा से पहले तैयार किया जाता है जिसे भक्तों को दीक्षा के बाद पूर्ण मंडल के रूप में देखने की अनुमति होती है।

कालचक्र दीक्षा का समय २१ जुलाई या तिब्बती चंद्र कैलेंडर के छठे महीने के चौथे दिन चोएकोरड्यूचेन (धर्म चक्र का पहला प्रवर्तन) से मेल खाता है, जो उस दिन को याद करने के लिए मनाया जाता है, जब बुद्ध ने पहली बार चार महान आर्य सत्यों का उपदेश दिया था।

अन्य धार्मिक आयोजन रद्द

सातवें अथिकालसंगताशीग्यात्सो तिब्बती क्षेत्र अमदो के कुंबुमसोटुक से है। किशोरावस्था में ही उनके पुनर्जन्म को मान्यता दी गई और १९९७ में धर्मासन पर बैठाया गया। वह कुंबुम मठ में रहते हैं। उन्होंने लैब्रांग ताशिक्यिल मठ में भी अध्ययन किया।

कुछ तिब्बती मीडिया ने यह भी बताया कि जुलाई में गांसु के कनल्हो (गैनान) प्रिफेक्चर में प्रसिद्ध लाब्रांगताशीक्यिल मठ के सातवें गुंगथांग रिनपोछे द्वारा की जानेवाली इसी तरह की कालचक्र दीक्षा को भी रद्द कर दिया गया था।

अधिकारियों ने जुलाई के महीने को गैनान प्रीफेक्चर की ७०वीं स्थापना दिवस के रूप में वर्णित करते हुए सिचुआन प्रांत में नगाबा (अबा) प्रीफेक्चर के डोज़ेज (रुओ'एर्गाई) में होने वाले प्रवचन कार्यक्रमों को रद्द कर दिया।

◆तिब्बत की जेलों और हिरासत केंद्रों का 'रात की रोशनी के आंकड़ों' के आधार पर विश्लेषण

rand.org/२७ जुलाई, २०२३

तिब्बत में अधिकारी अति सतर्कता बरतते हुए पहले से ही नागरिकों का दमन कर रहे हैं। 'स्थिरता बनाए रखने' की अपनी राष्ट्रव्यापी रणनीति के तौर पर वे प्रतिरोध करने के अहिंसक रूपों की अन्य अभिव्यक्तियों, जैसे आत्मदाह में सहायता या समर्थन करने और दलाई लामा की तस्वीरें रखने पर भी तिब्बतियों को हिरासत में ले रहे हैं, उन पर अत्याचार कर रहे हैं और उन्हें दोषी ठहरा रहे हैं।

हालांकि, तिब्बतियों को कैद करने और हिरासत में लेने के चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के प्रयासों की दमनीयता, कठोरता और बर्बरता को बहुत कम करके समझा गया है। झिंझियांग में उइगर और अन्य जातीय अल्पसंख्यकों को हिरासत में लेने और उन्हें कारावास में डालने में जिस अमानवीय और बर्बर तरीके का प्रयोग किया जाता है, उसकी इंतेहा है। हालांकि तिब्बती हिरासत प्रणाली अभी भी अंतरराष्ट्रीय समुदाय के लिए ब्लैक होल (अंध कूप) जैसा ही है।

कई मुद्दों पर साक्ष्य की कमी, विशेष रूप से तथाकथित 'व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्रों' और आपराधिक न्याय प्रणाली के माध्यम से हिरासत में होनेवाले दमन को लेकर कोई साक्ष्य का सबूत नहीं मिलता है। बल्कि, यह शोध की कई कमियों को दूर करने और स्थिति को बेहतर ढंग से समझने के लिए और अधिक शोध की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है।
इसलिए इस अध्ययन का उद्देश्य कम उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर स्थिति का आकलन करना है और तिब्बत में जेलों और हिरासत केंद्रों पर प्रकाश डालने के लिए एक अभिनव पद्धति- रात के समय रोशनी के आंकड़े- से लाभ उठाना है।
इसमें उपग्रह-आधारित सेंसर का उपयोग करके दैनिक आधार पर मापा गया, रात के समय का प्रकाश का आंकड़ा समय के साथ विशिष्ट स्थानों पर रात में बिजली की खपत के संतुलन को दर्शाता है। मासिक तौर पर रुझानों को एकत्रित कर निकाले गए ये आंकड़े पूरे तिब्बत में विशिष्ट हिरासत केंद्रों के निर्माण, वृद्धि या गिरावट के आधार पर संभावित परिवर्तनों को उजागर करने में मदद मिलती है। ये आंकड़े अकेले उपग्रह से लिए गए तस्वीरों में दिखाई नहीं दे सकते हैं।

मुख्य निष्कर्ष

पूरे तिब्बत में कम से कम ७९ जेलें और हिरासत केंद्र हैं।

इनमें से अधिकांश को छोटे, कम-सुरक्षा वाले हिरासत केंद्रों के रूप में आंका गया है, जो संभवतः निम्न-स्तरीय हिरासत और अल्पकालिक जेल का कार्य करते हैं।

इनमें से लगभग सभी केंद्र २०११ से पहले बनाए गए थे, जब तिब्बत के पूर्व पार्टी सचिव चेन क्वांगुओ (जिन्हें तिब्बत और झिंझियांग में दमन के मुख्य विचारकों के रूप में भी जाना जाता है) तिब्बत में सत्ता में आए थे। हालांकि हम इस संभावना से इनकार नहीं कर सकते कि चेन ने अपने आगमन पर राजनीतिक उद्देश्यों के लिए मौजूदा केंद्रों का नए सिरे से अपने विचार के अनुरूप उपयोग किया होगा।

कुल मिलाकर, तिब्बती हिरासत प्रणाली का समग्र आकार और पैमाना पिछले एक दशक में अपेक्षाकृत सुसंगत रहा है।

हालांकि, अलग-अलग हिरासत केंद्रों का आकलन करने पर २०१९ के बाद से उच्च सुरक्षा घेरे में रखे गए इन केंद्रों में रात के समय प्रकाश व्यवस्था में वृद्धि के बारे में पता करना मुश्किल है।

यह प्रवृत्ति लंबी हिरासत और कारावास का संकेत करती है और यह झिंझियांग में हालिया घटनाओं के ही समान है, जहां ऐसे केंद्रों में २०१९ और २०२० में रात के समय प्रकाश व्यवस्था में भारी और सक्रिय वृद्धि देखी गई है।

◆ कालोन नोरज़िन डोल्मा का पहला जापान दौरा संपन्न

tibet.net, १७ जुलाई, २०२३

टोक्यो। टोक्यो में एक सप्ताह के व्यस्त और जोशीले कार्यक्रम के सार्थक समापन के बाद सूचना और अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग (डीआईआईआर) की कालोन (मंत्री) नोरज़िन डोल्मा १७ जुलाई २०२३ की सुबह दिल्ली लौट आईं। प्रतिनिधि डॉ. आर्य छेवांग ग्याल्पो, जापान स्थित तिब्बत हाउस के छेल्हा और जापान के तिब्बती समुदाय के पूर्व अध्यक्ष काल्डेन ओबारा ने कालोन को हवाई अड्डे पर विदा किया।

कालोन नोरजिन डोल्मा की जापान यात्रा की कुछ प्रमुख उपलब्धियां यहां दी गई हैं। उन्होंने जापान में तिब्बत समर्थक समूह के सदस्यों से मुलाकात की और उनके साथ केंद्रीय तिब्बती प्रशासन की योजनाओं पर चर्चा की और उनकी राय और सहयोग मांगा।

एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम के तहत तिब्बत के लिए जापान संसदीय समर्थक समूह के अध्यक्ष शिमोमुरा हकुबुन और जापान संसद भवन में समूह की कार्य समिति के सदस्यों के साथ बैठक की गई। कालोन नोरज़िन डोल्मा ने तिब्बतियों को उनके राजनीतिक और मानवीय समर्थन के लिए अध्यक्ष और सदस्यों को धन्यवाद दिया। सांसदों ने निरंतर समर्थन और सहायता का आश्वासन दिया और परम पावन दलाई लामा और केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के लक्ष्य के प्रति बहुत सम्मान व्यक्त किया।

जापान के दो विश्वविद्यालयों के दौरे और बातचीत से संकाय सदस्यों और छात्रों को तिब्बत मुद्दे के बारे में जानने का मौका मिला। कालोन ने युवा तिब्बतियों को शिक्षित करने के लिए अध्यक्ष और संकायों को धन्यवाद दिया और वादा किया कि वे तिब्बती समुदाय को जापानी संसाधनों को उपलब्ध कराने में महान भूमिका निभाएंगे।

कालोन नोरज़िन डोल्मा ने क्योदो छुशिन न्यूज़ को विशेष साक्षात्कार दिया और शिंजुकु बुंका सेंटर में संवाददाता सम्मेलन को संबोधित किया, जहां ग्यारह से अधिक प्रमुख और स्थानीय मीडिया संस्थानों ने भाग लिया। कालोन ने मीडिया को तिब्बत की स्थिति, बातचीत की स्थिति, चीनी नीति और मीडिया से अपेक्षाओं के बारे में जानकारी दी। उन्होंने प्रतिनिधि आर्य छेवांग ग्याल्पो की पुस्तक 'हार्नेसिंग द ड्रैगन्स फ्यूम' का जापानी संस्करण 'चिबेटो नो हैनरॉन' पुस्तक का विमोचन किया।

कालोन ने टोक्यो विश्वविद्यालय में दूसरे मंगोल-तिब्बत सांस्कृतिक और धार्मिक संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में बीज भाषण दिया, जहां १५ से अधिक विद्वानों ने बात की और शोध-पत्र प्रस्तुत किए। संगोष्ठी में सौ से अधिक लोगों ने भाग लिया।

कालोन ने ओसाका के ताकेनाका से मुलाकात की और जापान में तिब्बती कार्यबल संसाधनों के पोषण और विकास की संभावना पर चर्चा की ताकि जापानी भाषा में दक्षता रखने वाले तिब्बतियों को जापान में आगे शिक्षित किया जा सके और नियोजित किया जा सके।

अपने जापान दौरे के अंतिम चरण में उन्होंने शिन्जुकुकु के निशियोचियाई में तिब्बत हाउस कार्यालय में जापान में रहनेवाले तिब्बतियों से मुलाकात की। कालोन नोरज़िन डोल्मा ने तिब्बतियों का अभिवादन किया और उन्हें अपनी यात्रा के उद्देश्य के बारे में बताया और यात्रा के दौरान हुई राजनीतिक, सामाजिक और शैक्षिक बातचीत और प्राप्त सकारात्मक परिणामों पर अपनी संतुष्टि व्यक्त की। उन्होंने तिब्बतियों को सलाह दी कि वे अपने साझा लक्ष्य को न भूलें और एकजुट रहें।

◆ लैटिन अमेरिका स्थित तिब्बत कार्यालय ने परम पावन दलाई लामा के ८८वें जन्मदिन के अवसर पर एक महीने तक चलने वाली करुणा यात्रा शुरू की

tibet.net, ०३ जुलाई, २०२३

परम पावन दलाई लामा के ८८वें जन्मदिन पर ०६ जुलाई से पूरे लैटिन अमेरिका में करुणा की शिक्षा को प्रसारित करने के लिए 'करुणा के साथ संबंध' नामक एक विशेष यात्रा का आयोजन किया जा रहा है।

प्रतिनिधि जिग्मे छेरिंग के नेतृत्व में 'कनेक्शन विद कम्पैशन' टूर रविवार, ०२ जुलाई को चिली के सैन टियागो में ड्रि-क्युंग काग्यू से शुरू हुआ। अगले दो हफ्तों तक यह कार्यक्रम बोगोटा के यामांताका सेंटर, मेक्सिको सिटी में मेक्सिको कासा तिब्बत, सैन जोस में एसोसिएशन कल्चरल तिब्बतीनोकोस्टारिसेंस, अर्जेंटीना में ब्यूनस आयर्स, बोलीविया के सांताक्रूज में थब्शे डार्ग्येलिंग, ब्राजील के नेटाल में रंगज़ेन: मोविमेंटोतिबते लिवरे में आयोजित किए जाएंगे और ब्राज़ील के साओ पाउलो स्थित तिब्बत हाउस में इसका समापन होगा।

यह दौरा लोगों को करुणा के सिद्धांतों से जुड़ने और उन्हें अपने जीवन में शामिल करने के व्यावहारिक तरीकों की खोज करने का अवसर प्रदान करेगा। महीने भर चलने वाला यह समारोह कार्रवाई का आह्वान करने वाला है, जो हर किसी को दौरे के दौरान और उसके बाद भी करुणा की साधना के लिए प्रतिबद्ध होने के लिए आमंत्रित करता है।

प्रतिनिधि छेरिंग ने कहा, 'दलाई लामा के उपदेशों का पालन करके और करुणा को अपनाकर, हम एक अधिक सामंजस्यपूर्ण, समावेशी और करुणा से पूर्ण दुनिया के निर्माण में योगदान दे सकते हैं। आइए हम करुणा की साधना के लिए खुद को समर्पित करके और पूरे लैटिन अमेरिका और उसके बाहर इसकी परिवर्तनकारी शक्ति का प्रसार करके परम पावन के ८८वें जन्मदिन को मनाने में एक साथ शामिल हों।'

सैन टियागो में ड्रिकुंग काग्यू में कनेक्शन विद कम्पैशन' दौरे की शुरुआत ने गणमान्य व्यक्तियों, तिब्बती बौद्ध अनुयायियों और टीएसजी एमिगोस डेल तिब्बत के सदस्यों को एक साथ कर दिया। कार्यक्रम की शुरुआत लैटिन में दौरे के परिचय के साथ हुई, जिसमें परम पावन दलाई लामा की शिक्षाओं में करुणा के महत्व पर जोर दिया गया।

समारोह के हिस्से के रूप में परम पावन की ८८वीं जयंती के अवसर पर खुशी मनाने के लिए केक काटने का समारोह आयोजित किया गया था।

◆ फ्रांसीसी सीनेट ने परम पावन दलाई लामा के ८८वें जन्मदिन की मेजबानी की

tibet.net, ०७ जुलाई २०२३

पेरिस। ब्यूरो डू तिब्बत पेरिस (तिब्बत कार्यालय) ने फ्रांसीसी सीनेट ने तिब्बत समर्थक समूह के सहयोग से ०६ जुलाई २०२३ को लगभग ६० समारोहकर्ताओं के साथ फ्रांसीसी सीनेट के लेस सैलून टूरनोन में परम पावन दलाई लामा की ८८वीं जयंती का समारोह आयोजित किया।

समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में फ्रांसीसी सीनेट के तिब्बत समर्थक समूह के अध्यक्ष सीनेटर जैकलीन यूस्टाचे-ब्रिनियो के साथ सीनेटर एल्स जोसेफ, सीनेटर एनिक बिलोन, सीनेटर आंद्रे गैटोलिन, पेरिस के उप महापौर जीन ल्यूक रोमेरो-मिशेल, उप प्रतिनिधि फिलिप, फ्रांस में ताइपे प्रतिनिधि कार्यालय से सी.एल.येन, फ्रांस-तिब्बत समर्थक समूहों के सदस्य और मीडियाकर्मियों ने भाग लिया।

तिब्बती पक्ष से इस कार्यक्रम में तिब्बती सांसद थुप्टेन ग्यात्सो, प्रतिनिधि रिगज़िन चोएडन जेनखांग (ओओटी ब्रुसेल्स), समन्वयक थुप्टेन छेरिंग, अध्यक्ष कर्मा थिनले और फ्रांसीसी-तिब्बती समुदाय के कार्यकारी सदस्य, क्षेत्रीय तिब्बती युवा संघ के प्रतिनिधि, डोखमचुसीगैंगडुक के

क्षेत्रीय चैप्टर के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, क्षेत्रीय यू-त्सांग चोल्खा के अध्यक्ष और क्षेत्रीय डोमेय चोल्खा के उपाध्यक्ष और स्टूडेंट्स फॉर फ्री तिब्बत के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि सीनेटर जैकलीन यूस्टाचे-ब्रिनियो ने उपस्थित लोगों का अभिवादन किया और अपने भाषण में तिब्बत मुद्दे पर अपना समर्थन जारी रखने का आश्वासन दिया। इसके बाद प्रतिनिधि रिगज़िन चोएडन जेनखांग का संबोधन हुआ। प्रतिनिधि ने सभा को परम पावन की जीवन उपलब्धियों और तिब्बत के अंदर की गंभीर स्थितियों से अवगत कराया।

◆ भारत में तिब्बत समर्थक समूहों ने परम पावन १४वें दलाई लामा की ८८वीं जयंती मनाई

tibet.net, ०८ जुलाई, २०२३

०७ जुलाई, २०२३, नई दिल्ली। परम पावन १४वें दलाई लामा की ८८वीं जयंती ०६ जुलाई, २०२३ को दुनिया भर में तिब्बतियों और परम पावन के मित्रों, अनुयायियों और शुभचिंतकों द्वारा मनाई गई। भारत के भाइयों और बहनों, भारतीय तिब्बत समर्थक समूहों ने भी इस शुभ अवसर को परम पावन १४वें दलाई लामा के जीवन और संदेश देने के साथ मनाया।

भारत-तिब्बत मैत्री संघ (आईटीएफएस) और इसके क्षेत्रीय चैप्टरों ने देश के विभिन्न हिस्सों में विभिन्न गतिविधियों और कार्यक्रमों का आयोजन करके परम पावन दलाई लामा का ८८वां जन्मदिन मनाया। बिहार की राजधानी पटना में आईटीएफएस द्वारा बिहार सर्वोदय मंडल, पटना के कार्यालय में बिहार सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष चंद्र भूषण की अध्यक्षता में प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया। प्रार्थना सभा में आईटीएफएस पटना के सदस्य उपस्थित थे। सभा ने परम पावन दलाई लामा की लंबी उम्र के लिए प्रार्थना की। बिहार के भागलपुर में इस अवसर को अशोक भवन सभागार में बच्चों, महिलाओं और प्रबुद्ध लोगों की उपस्थिति में केक काटकर बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। बिहार के मुजफ्फरपुर में, भारत-तिब्बत मैत्री संघ की बिहार राज्य इकाई द्वारा परम पावन का ८८वां जन्मदिन लॉ कॉलेज में धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता आईटीएफएस बिहार के अध्यक्ष डॉ. हरेंद्र कुमार ने की। यहां पर सभी आगतों ने परम पावन के चित्र पर माल्यार्पण कर उनकी दीर्घायु की कामना की। बिहार इकाई के सचिव डॉ. विकास उपाध्याय ने परम पावन के लेखों का मनोरमा अंक वितरित किया। इस अवसर पर आईटीएफएस के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सुरेंद्र कुमार ने कहा कि अपना पुनर्जन्म चुनने का अधिकार सिर्फ दलाई लामा को है, चीन को नहीं। सभी ने परम पावन की दीर्घायु की कामना की। आईटीएफएस नवादा ने भी इस अवसर पर जश्न मनाया।

आईटीएफएस जोधपुर जिला इकाई के तहत जोधपुर में परम पावन दलाई लामा की ८८वीं जयंती बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। जोधपुर के सभी सदस्यों ने परम पावन दलाई लामा की दीर्घायु की कामना की। इस अवसर पर आईटीएफएस महिला मोर्चा उपाध्यक्ष शमा पुरोहित, जोधपुर जिला लोक अभियोजक श्रीमान लाडा राम जी विश्नोई, चन्द्रशेखर जी शर्मा, नरेश गेवा, नेम सिंह जी राठौड़, एडवोकेट गिरधारी लाल जी कंसारा, प्रवीण देवल, रणजीत सिंह राठौड़, चिरंजीलाल जी पुरोहित एवं अन्य उपस्थित थे।

मध्य प्रदेश के रीवा में आईटीएफएस ने समाजवादी कार्यकर्ता समूह, नारी चेतना मंच और विंध्याचल जन आंदोलन के साथ इस अवसर पर परम पावन दलाई लामा के लंबे और स्वस्थ जीवन के लिए प्रार्थना सभा आयोजित की। कार्यक्रम में आईटीएफएस के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष अजय खरे, सामाजिक कार्यकर्ता बृजवासी प्रसाद तिवारी, योगेश वर्मा, इमरान खान, गफूर खान और नारी चेतना मंच की नेता शहरुन्निशा ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

महाराष्ट्र में आईटीएफएस के सदस्यों ने भंडारा के राणा भवन सभागार में परम पावन दलाई लामा का ८८वां जन्मदिन अंतरधार्मिक प्रार्थनाएं करके बड़े उत्साह के साथ मनाया। समारोह की अध्यक्षता महाराष्ट्र के प्रसिद्ध साहित्यकार एवं विचारक प्रमोद कुमार अनेराव ने की। मंच पर बौद्ध श्रद्धालु डॉ. धम्मदीप, पी.सी. मिश्रा, सिख धर्म के प्रतिनिधि रूबी चड्ढा, ईसाई धर्म के प्रतिनिधि जोसेफ ठाकुर और मुस्लिम धर्म के प्रतिनिधि मुनव्वर अली और भंडारा नगर परिषद के पूर्व अध्यक्ष महेंद्र गडकरी, भंडारा जिला केंद्रीय सहकारी बैंक के निदेशक प्रेम सागर गणवीर शामिल थे। सभी धर्मों के प्रतिनिधियों ने परम पावन दलाई लामा की लंबी उम्र और अच्छे स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना कीं और शुभकामनाएं दीं। इस जन्मदिन समारोह की अध्यक्षता आईटीएफएस महाराष्ट्र के अध्यक्ष अमृत बंसोड़ द्वारा किया गया और भंडारा इकाई के समन्वयक गुलशन गजभिये द्वारा संचालन किया गया। चंद्रपुर में आईटीएफएस सदस्यों ने भी इस अवसर का जश्न मनाया।

भारत- तिब्बत सहयोग मंच (बीटीएसएम) ने दुनिया को अहिंसा, मानवता और प्रेम के संदेश की वकालत करने वाले तिब्बती बौद्ध नेता परम पावन दलाई लामा की ८८वीं जयंती बड़े उत्साह के साथ मनाई। राजस्थान में भीलवाड़ा में बीटीएसएम के युवा एवं महिला विभाग के सदस्यों द्वारा एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर परम पावन दलाई लामा के चित्र के समक्ष केक काटकर उनके अच्छे स्वास्थ्य एवं दीर्घायु के लिए प्रार्थना की गई। असम में बीटीएसएम के अध्यक्ष कैलाश शर्मा ने कई प्रमुख नागरिकों और समूह के अधिकारियों के साथ गुवाहाटी के जोरपुखुरी बीच पर इस दिन को मनाया। कार्यक्रम का औपचारिक उद्घाटन प्रसिद्ध नाटककार और बीटीएसएम असम प्रांत के सलाहकार अरूप बोरठाकुर ने किया। सभी ने परम पावन दलाई लामा को जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं और अच्छे स्वस्थ जीवन की शुभकामनाएं दीं। भारत-तिब्बत सहयोग मंच ने उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद, मेरठ, शामली, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, हापुड और गौतमबुद्ध नगर में भी इस अवसर पर कार्यक्रमों का आयोजन किया।

भारत-तिब्बत समन्वय संघ (बीटीएसएस) ने अपने सदस्यों के बीच और भारत में तिब्बती बस्तियों में तिब्बती भाइयों और बहनों के साथ परम पावन दलाई लामा का जन्मदिन मनाया। दिल्ली में बीटीएसएस सदस्यों का नेतृत्व राष्ट्रीय महासचिव महिला विंग श्रीमती संध्या सिंह ने किया और वह सामयेलिंग तिब्बती बस्ती, मजनूं

का टिला में आयोजित समारोह में शामिल हुईं। बाद में उन्होंने द्वारका में एक कार्यक्रम भी आयोजित किया जहां उनकी टीम के साथ, उनके एनजीओ दुर्गा सप्त शक्ति फाउंडेशन के बच्चों ने इस अवसर का जश्न मनाया। इस अवसर पर बीटीएसएस के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो. प्रयाग दत्त जुयाल का देहरादून के तिब्बती बस्ती में अभिनंदन किया गया। बीटीएसएस के राष्ट्रीय सचिव कौन्तेय जायसवाल और बसंतजी मैनपाट तिब्बती बस्ती में जन्मदिन कार्यक्रम में शामिल हुए। यह वह बस्ती है जिसे कौन्तेय जायसवाल ने गोद लिया है।

हरियाणा में परम पावन दलाई लामा का जन्मदिन केक काटकर मनाया गया और बीटीएसएस हरियाणा प्रांत महिला विभाग द्वारा कुरुक्षेत्र के ब्रह्मसरोवर पर अवस्थित प्राचीन अशोक बौद्ध स्तूप की यात्रा की गई। यहां आयोजित कार्यक्रम में दलाई लामा के जीवन पर प्रकाश डाला गया और उनकी शिक्षाओं पर चर्चा की गई। वहां मौजूद सभी सदस्यों ने बौद्ध स्मारक का अवलोकन किया और कैलाश-मानसरोवर मुक्ति महासंकल्प भी लिया गया। इस मौके पर प्रांत संरक्षक और राष्ट्रीय महासचिव डॉ. शकुंतला शर्मा, प्रांतीय महासचिव डॉ. रुकमेश चौहान मौजूद रहे। वाराणसी में परम पावन दलाई लामा का जन्मदिन केंद्रीय तिब्बती उच्च शिक्षा संस्थान, सारनाथ में मनाया गया। इसमें राष्ट्रीय महासचिव अरविंद केशरी जी एवं राष्ट्रीय मंत्री विवेक सोनी जी एवं काशी प्रांत अध्यक्ष राजीव झा जी विशिष्ट अतिथि के रूप में शामिल हुए।

भारत- तिब्बत संघ (बीटीएस) ने इस अवसर पर राजस्थान के अलवर में समारोह का आयोजन किया। कार्यक्रम का आयोजन विवेकानन्द मेमोरियल में किया गया। इस दौरान बीटीएस अलवर इकाई की पूरी टीम को पूज्य स्वामी विवेकानन्द के स्मारक के दर्शन का भी पुण्य लाभ मिला। वहीं भारत विकास परिषद द्वारा पूरी टीम को स्वामी विवेकानन्द की जीवनी पर आधारित पुस्तक देकर सम्मानित किया गया।

भारत-तिब्बत संघ की जम्मू-कश्मीर इकाई द्वारा परम पावन दलाई लामा के जन्मदिन के उपलक्ष्य में वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। बीटीएस ने झारखंड की राजधानी रांची और असम की राजधानी गुवाहाटी में भी इस दिन को मनाया।

भारत- तिब्बत संवाद मंच ने उत्तर प्रदेश के तीर्थस्थल कुशीनगर में यह शुभ अवसर मनाया।

कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज- इंडिया के राष्ट्रीय संयोजक आर.के. खिरमे अरुणाचल प्रदेश के पश्चिम कामेंग जिले में परम पावन १४वें दलाई लामा की ८८वीं जयंती में शामिल हुए। इस अवसर पर बोमडिला वेलफेयर सोसाइटी द्वारा सरकारी कॉलेज, बोमडिला और वन विभाग के सहयोग से सरकारी कॉलेज, बोमडिला में एक सामूहिक वृक्षारोपण अभियान का आयोजन किया गया। अभियान के दौरान लगभग ३०० पौधे लगाए गए, जिसमें पूर्व मंत्री और बोमडिला वेलफेयर सोसाइटी के संरक्षक आर.के. खिरमे, द्वितीय अरुणाचल स्काउट्स के कर्नल भास्कर पांडे, कॉलेज के प्राचार्य डॉ. ताशी फंटसो, बोमडिला वेलफेयर सोसाइटी के महासचिव एल.टी. दामो, कॉलेज के छात्र संघ के सहायक महासचिव रिनचिन रोंगराडु, संकाय सदस्य और छात्र शामिल हुए।

दिल्ली में परम पावन दलाई लामा की जयंती के साथ-साथ स्वर्गीय डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की भी जयंती मनाई गई। इस अवसर पर भारतीय हवाईअड्डा प्राधिकरण, सफदरजंग के ऑफिसर्स क्लब में एक सेमिनार का आयोजन किया गया, जिसमें भारत और तिब्बत के कई प्रमुख विद्वानों ने भाग लिया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि माननीय इंद्रेश कुमार जी थे। अरुणाचल के पूर्व मुख्यमंत्री प्रेम खांडू थुंगन, श्रीमती रिनचेन ल्हामो, डॉ. शाहिद अख्तर, श्रीमती शालिनी अली, विजय जॉली, भूपेन्द्र कंसल, आचार्य येशी और परविंदर तिवारी, येशी ताशी और सरला सिंह उपस्थित थे। कार्यक्रम में भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय की कार्यवाहक समन्वयक ताशी देकी भी शामिल हुईं। कार्यक्रम के आयोजक हिमालय परिवार के राष्ट्रीय सचिव और कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज़- इंडिया के क्षेत्रीय संयोजक ऋषि वालिया थे।

◆कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज़-इंडिया की नई दिल्ली में महत्वपूर्ण बैठक

tibet.net, २४ जुलाई, २०२३

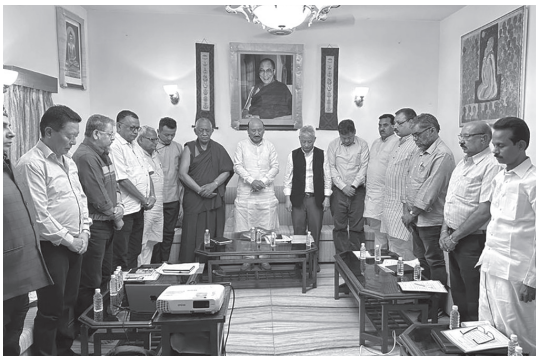

नई दिल्ली। भारत में तिब्बत समर्थक समूहों (टीएसजी) की सामूहिक आवाज का प्रतिनिधित्व करने वाले कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज- इंडिया (सीजीटीसी-आई) ने २३ जुलाई २०२३ को नई दिल्ली में नई दिल्ली स्थित परम पावन दलाई लामा ब्यूरो में एक महत्वपूर्ण बैठक की।

सीजीटीसी-आई के राष्ट्रीय संयोजक श्री आर.के. खिरमे की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में परम पावन दलाई लामा के ब्यूरो के प्रतिनिधि लोबसांग शास्त्री और सीटीए के डीआईआईआर के अतिरिक्त सचिव तेनज़िन लेक्षय के साथ-साथ राष्ट्रीय सह-संयोजक वेन लामा चोस्फेल ज़ोटपा, श्री सुरेंद्र कुमार और श्री अरविंद निकोसे जैसी प्रमुख हस्तियां एक साथ आईं। इसके अलावा, सीजीटीसी-आई के १२ क्षेत्रीय संयोजक और भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय (आईटीसीओ) की समन्वयक और कर्मचारी भी उपस्थित थे।

आईटीसीओ की उप समन्वयक ताशी देकी ने स्वागत भाषण दिया और बैठक के एजेंडे को संक्षिप्त में प्रस्तुत किया। सभा में आईटीसीओ के नए समन्वयक के रूप में थुप्टेन रिनज़िन का परिचय भी कराया गया।

बैठक के दौरान स्मरण का एक मार्मिक क्षण तब आया, जब तिब्बती शहीदों और तिब्बत समर्थक समूहों के उन दिवंगत सदस्यों के लिए एक मिनट का मौन रखा गया, जिन्होंने अपना जीवन तिब्बत मुक्ति साधना के लिए समर्पित कर दिया।

सीजीटीसी-आई के सदस्यों ने समूह के सुधार के बाद आयोजित इस पहली बैठक में अपना-अपना परिचय दिया। अपनी प्रारंभिक टिप्पणी में श्री आर.के. खिरमे ने सीजीटीसी-आई में सुधार के महत्व और तिब्बती आंदोलन में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर दिया। उन्होंने समूह के लिए दो प्राथमिक उद्देश्यों को रेखांकित किया-: पहला, परम पावन दलाई लामा/सीटीए नेतृत्व के प्रतिनिधियों और पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना की सरकार के बीच

बातचीत को फिर से शुरू करने की सुविधा प्रदान करना और दूसरा, भारत और अन्य वैश्विक नेताओं से चीनी नेतृत्व पर बातचीत को प्राथमिकता देने के लिए दबाव डालने की अपील करना।

परम पावन दलाई लामा ब्यूरो के प्रतिनिधि लोबसांग शास्त्री ने भारत और तिब्बत के बीच सदियों पुराने संबंधों को दोहराया और दोनों देशों द्वारा साझा किए गए गुरु-शिष्य संबंधों पर जोर दिया। उन्होंने पिछले छह दशकों में तिब्बती समुदाय के प्रति अटूट समर्थन के लिए भारत सरकार और भारत के लोगों के प्रति गहरी कृतज्ञता व्यक्त की और एक सफल बैठक के लिए शुभकामनाएं दीं।

बैठक के दौरान चर्चा २८-२९ नवंबर २०२२ को नई दिल्ली में आयोजित सातवें अखिल भारतीय तिब्बत समर्थक समूहों के सम्मेलन (एआईटीएसजी) के बाद की गतिविधियों के इर्द-गिर्द घूमती रही। इसमें सीजीटीसी-आई के क्षेत्रीय संयोजकों के मार्गदर्शन में टीएसजी द्वारा समन्वित प्रयासों के माध्यम से प्रस्तावित कार्यों को निष्पादित करने के लिए योजनाएं तैयार की गईं। इसके अतिरिक्त, बैठक में सीजीटीसी-आई के उद्देश्यों, ढांचे और कामकाज के नियमों में संशोधन पर चर्चा हुई, साथ ही इन परिवर्तनों को अंतिम रूप देने के लिए पांच सदस्यीय समिति का गठन किया गया।

सीजीटीसी-आई और टीएसजी के बीच मजबूत संबंध की महत्वपूर्ण आवश्यकता की जरूरत को महसूस करते हुए प्रतिभागियों ने तिब्बत मुक्ति साधना को बढ़ावा देने के लिए आम भारतीय लोगों के बीच तिब्बत के बारे में जागरूकता बढ़ाने के महत्व पर जोर दिया। इस दौरान कोर ग्रुप के संचालन को मजबूत करने और तिब्बत मुक्ति साधना की स्थायी भावना को सुनिश्चित करने के लिए रचनात्मक प्रतिक्रिया और सुझावों का आदान-प्रदान किया गया।

बैठक भारत- तिब्बत समन्वय कार्यालय (आईटीसीओ) नई दिल्ली द्वारा आयोजित की गई थी।

एकजुटता और सौहार्द जतलाने के लिए नई दिल्ली स्थित सैनिक फार्म के कंट्री क्लब में कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज़- इंडिया के सदस्यों के सम्मान में रात्रिभोज का आयोजन किया गया। रात्रिभोज की मेजबानी भाजपा के वरिष्ठ नेता और तिब्बत के समर्पित मित्र डॉ. विजय जॉली ने की। डॉ. जॉली ने सभी सीजीटीसी-आई सदस्यों को अपनी शुभकामनाएं दीं और तिब्बती मुद्दे के प्रति अपना अटूट समर्थन व्यक्त किया।

यह बैठक तिब्बत की आजादी के लिए चल रहे संघर्ष में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है, क्योंकि सीजीटीसी-आई तिब्बती मुद्दे को आगे बढ़ाने और भारत और तिब्बत के बीच संबंधों को मजबूत करने के लिए सक्रिय कदम उठा रहा है। नए दृढ़ संकल्प के साथ, कोर ग्रुप और उससे जुड़े समर्थक समूहों का लक्ष्य तिब्बत मुक्ति साधना की मशाल को जलाए रखना है।

◆ सिएटल ds वी-टैग सदस्यों ने अमेरिकी कांग्रेस की सांसद किम श्रियर से मुलाकात की, यूएस-तिब्बत विधेयक के लिए समर्थन मांगा और तिब्बत में बिगड़ती स्थिति पर चर्चा की

tibet.net, १४ जुलाई, २०२३

सिएटल (वाशिंगटन)। सिएटल और वाशिंगटन के तिब्बती समुदाय के सदस्यों ने ०१ जुलाई २०२३ को अमेरिकी कांग्रेस की सांसद किम श्रियर से मुलाकात की और उनसे सदन में द्विदलीय यूएस-तिब्बत विधेयक का समर्थन करने का आग्रह किया। इसके साथ ही उन्हें तिब्बत की बिगड़ती मानवाधिकार स्थिति के बारे में जानकारी दी। समूह में स्वैच्छिक तिब्बत पक्षधरता समूह (वी-टीएजी) के कई सदस्य भी शामिल थे, जिसका नेतृत्व वाशिंगटन के तिब्बती एसोसिएशन के पक्षधरता समूह के समन्वयक और वी-टीएजी सदस्य पासंगभूति ने किया। कांग्रेस की महिला सांसद किम श्रियर ने समूह के साथ लगभग ३० मिनट बिताए। इसके बाद प्रतिनिधि कार्यालय के एक कर्मचारी कोडी ऑलसेन के साथ बैठक की।

बैठक के कई उद्देश्यों में से एक चीनी शासन के तहत तिब्बत में तिब्बती लोगों की दुर्दशा और अमेरिकी सरकार द्वारा तिब्बत के पक्ष में कार्रवाई करने की आवश्यकता पर चर्चा करना था। उन्होंने तिब्बत में हाल के मानवाधिकारों के उल्लंघन और चीन की कठोर भाषा नीति, पर्यावरण विनाश, अंतरराष्ट्रीय मीडिया पर प्रतिबंध और निर्वासन में सांस्कृतिक संरक्षण पर चर्चा की। प्रतिनिधि और कर्मचारियों को समूह की गतिविधियों के बारे में जानकारी दी गई और तिब्बती मुद्दे का समर्थन करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। इसके अलावा, समूह वाशिंगटन के एक नए प्रमुख नेता के साथ आत्मीय संबंध स्थापित करने और बिल एचआर- ५३३ की पैरवी के अपने लक्ष्यों को आगे बढ़ाने में सफल हुआ। यह बिल तिब्बत-चीन संघर्ष अधिनियम के लिए प्रस्ताव को बढ़ावा देनेवाला है, जिसे २६ जनवरी २०२३ को कांग्रेस में पेश किया गया था। सांसद श्रियर विशेष रूप से समूह के काम और वाशिंगटन और उसके आसपास अपने पक्षधरता को बढ़ाने के काम में आने वाली चुनौतियों को समझने में रुचि रखती हैं और वास्तव में तिब्बत में राजनीतिक स्थिति के बारे में और अधिक जानने में रुचि रखती हैं।

कांग्रेस सदस्य किम श्रियर चीन द्वारा बड़े पैमाने पर खनन, वनों की कटाई और कटाई के माध्यम से तिब्बत के प्राकृतिक और हरे-भरे पर्यावरण को नष्ट करने के साथ-साथ तिब्बती

किसानों और खानाबदोशों को उनकी पारंपरिक भूमि और नदियों पर बन रहे दानवाकार बांधों के निर्माण स्थल से विस्थापित करने के बारे में समूह की चिंताओं के प्रति विशेष रूप से रुचि रखती हैं और अत्यधिक चौकस दिखीं। तिब्बत की नदियां पड़ोसी देशों से होकर बहती हैं। पर्यावरण कार्यकर्ता प्रशिक्षु छेचु डोल्मा ने अधिक विस्तार से बताया और वैश्विक पारिस्थितिकी और जलवायु संतुलन बनाए रखने में तिब्बत के पर्यावरण और नदियों के महत्व पर जोर दिया। छेचु डोल्मा ने तिब्बत के पर्यावरण के विनाश के प्रभावों को रोकने के लिए तत्काल कार्रवाई करने की आवश्यकता पर जोर दिया। यह पर्यावरणीय विनाश चीन के कब्जे से और तेज हो गया है, और इससे पारंपरिक तिब्बती समुदायों, संस्कृति और भाषा का नुकसान हुआ है। उन्होंने आगे कहा कि तिब्बत के साथ एकजुटता के साथ खड़े होकर अमेरिका न्याय और एकीकरण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दिखा सकता है और तिब्बतियों को उनके अधिकारों के लिए लड़ने और अपनी मातृभूमि को पुनः प्राप्त करने में मदद कर सकता है।

समूह के सदस्यों ने स्थिति का दस्तावेजीकरण करने और अंतरराष्ट्रीय समुदाय में जागरुकता फैलाने के लिए अंतरराष्ट्रीय मीडिया को तिब्बत तक जाने की अनुमति देने की आवश्यकता पर भी प्रकाश डाला। इसके अलावा इस राजनीतिक नियंत्रण का तिब्बती लोगों की बौद्ध धर्म की स्वतंत्र रूप से साधना करने, सीखने और साझा करने की क्षमता पर विनाशकारी प्रभाव पड़ा है। इसके अलावा, तिब्बती बौद्ध धर्म पर सीसीपी का नियंत्रण न केवल भूमि, शिक्षा और लोगों को प्रतिबंधित कर रहा है बल्कि हमारी पारंपरिक मान्यताओं की निरंतरता के लिए खतरा पैदा कर रहा है।

उन्होंने निर्वासन में रह रहे तिब्बतियों के लिए अपनी संस्कृति को संरक्षित करने और इसे भावी पीढ़ियों तक पहुंचाने में सक्षम होने की आवश्यकता पर भी चर्चा की। समूह ने साक्ष्य प्रस्तुत किए, जिससे पता चलता है कि कैसे चीनी सरकार की भाषा नीति तिब्बती संस्कृति के संरक्षण के लिए हानिकारक है और कैसे कब्जे के परिणामस्वरूप पर्यावरण का विनाश हो रहा है। अंत में समुदाय में प्रत्येक तिब्बती की भूमिकाओं पर चर्चा करते हुए समूह ने उन्हें तिब्बती निर्वासित समुदाय के बड़े संदर्भ में तिब्बती पहचान के महत्व को समझने में मदद की है और यह बताया है कि कैसे उनकी व्यक्तिगत भूमिकाएं वाशिंगटन में तिब्बती मुद्दे को आकार देने में मदद कर सकती हैं।

◆ ताइवान स्थित तिब्बत कार्यालय के प्रतिनिधि ने नस्लीय भेदभाव के उन्मूलन पर राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग की प्रेस कॉन्फ्रेंस में भाग लिया

tibet.net, २५ जुलाई, २०२३

ताइपे। ताइवान के राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग ने पिछले बुधवार यानि १९ जुलाई २०२३ को आयोजित एक संवाददाता सम्मेलन में 'आईसीईआरडी की पहली राष्ट्रीय रिपोर्ट पर स्वतंत्र मूल्यांकन' रिपोर्ट जारी की।

केंद्रीय जांच आयोग के अध्यक्ष और उपाध्यक्ष की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम में अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, इंडोनेशिया, इज़राइल, फिलीपींस के प्रतिनिधि और ताइवान स्थित तिब्बत कार्यालय के प्रतिनिधि केलसांग ग्यालत्सेन बावा ने भाग लिया।
ताइवान के केंद्रीय जांच आयोग की अध्यक्ष सह राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग की अध्यक्ष चेन जू ने अपने संबोधन में कहा कि मानवाधिकार की लड़ाई स्थायी है।

उन्होंने कहा कि ताइवान सरकार ने पहली बार रिपोर्ट जारी की है जिसकी स्वतंत्र अधिकारियों द्वारा जांच किए जाने की उम्मीद है। अपरिभाषित कानूनों या कानूनों की प्रयोजनहीनता के कारण नस्लीय भेदभाव अब अनियंत्रित हो गया है। अब, जब यह सभी के ध्यान में आ गया है तो उम्मीद है कि इससे नस्लीय भेदभाव को ख़त्म करने में मदद मिलेगी।'

३१ मार्च १९६६ से ताइवान सभी प्रकार के नस्लीय भेदभाव के उन्मूलन पर अंतरराष्ट्रीय कन्वेंशन (आईसीईआरडी) का हस्ताक्षरकर्ता था। हालांकि, बाद में इसे आईसीईआरडी से निष्कासित कर दिया गया और वर्तमान में यह इसका सदस्य नहीं है। इसके बावजूद इसने अपने दायित्वों को पूरा करना जारी रखा और १४ दिसंबर २०२२ को अपनी पहली रिपोर्ट प्रकाशित की। इस रिपोर्ट की निगरानी राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के तीन सदस्यों ने की। इसने मानव अधिकार के मुद्दों जैसे कि राज्यविहीन व्यक्तियों, प्रवासी श्रमिकों और निवास और देशीकरण चाहने वालों पर प्रकाश डाला। नस्लीय भेदभाव के मुद्दों में तिब्बतियों का वीज़ा मुद्दा भी शामिल था।

◆टोक्यो विश्वविद्यालय में मंगोल-तिब्बत सांस्कृतिक और धार्मिक विषय पर संगोष्ठी

tibet.net, १६ जुलाई, २०२३

टोक्यो। टोक्यो विश्वविद्यालय के कोमाबा परिसर में १५ जुलाई २०२३ को दूसरा मंगोल-तिब्बत सांस्कृतिक और धार्मिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। दक्षिणी मंगोलियाई कांग्रेस ने सह-आयोजक के रूप में जापान स्थित तिब्बत हाउस और ताइवान न्यू स्कूल फॉर डेमोक्रेसी के साथ संगोष्ठी का आयोजन किया। संगोष्ठी १९१३ में तिब्बत और मंगोलिया के बीच हुई तिब्बत-मंगोल मैत्री और गठबंधन संधि की ११०वीं वर्षगांठ के अवसर पर आयोजित की गई।

संगोष्ठी का संचालन करने वाले श्री मिउरा कोटारो ने अतिथियों, विद्वानों और दर्शकों का स्वागत किया और संगोष्ठी की अवधारणा को संक्षेप में समझाया, 'संगोष्ठी का उद्देश्य तिब्बत और तिब्बत के पुराने ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और धार्मिक संबंधों का पता लगाना और उन्हें उचित महत्व देना है। मंगोलिया प्राचीन काल से ही विद्वानों द्वारा इस विषय पर चर्चा करने और शोध- पत्र प्रस्तुत करता रहा है।' संगोष्ठी में विद्वानों से दोनों देशों के बीच १९१३ की संधि का सम्मान करने और उसे देखने, इसकी वैधता और चीनी कम्युनिस्ट शासन के साथ तिब्बत-मंगोल संघर्ष को हल करने को लेकर बहस करने का भी आग्रह किया गया।

लगभग १५ मंगोलियाई, जापानी, ताइवानी और तिब्बती विद्वानों ने इस विषय पर बात की और तिब्बत-मंगोल अध्ययन के विभिन्न पहलुओं और १९१३ की संधि पर अपने दृष्टिकोण के समर्थन में दस्तावेज प्रस्तुत किए।

दक्षिणी मंगोलिया कांग्रेस के अध्यक्ष श्री टेम्सेल्टशोबचुड ने आयोजकों की ओर से बीज भाषण दिया। कालोन नोरज़िन डोल्मा ने मुख्य अतिथि के रूप में तिब्बत की ओर से प्रारंभिक टिप्पणी दी।

कालोन नोरज़िन डोल्मा ने इस महत्वपूर्ण संगोष्ठी के लिए आयोजकों को धन्यवाद दिया और तिब्बत के मंगोलिया के साथ लंबे ऐतिहासिक और धार्मिक संबंधों पर बात की। उन्होंने इस पर बात की कि कैसे १९१३ की संधि यह साबित करने के लिए सबसे बड़ा प्रमाण है कि तिब्बत और मंगोलिया उस समय स्वतंत्र देश थे। उन्होंने विश्वविद्यालय परिसर में संगोष्ठी आयोजित करने में समर्थन के लिए टोक्यो विश्वविद्यालय को भी धन्यवाद दिया।

संगोष्ठी को तीन सत्रों में विभाजित किया गया था। पहला सत्र '१९१३ की तिब्बत- मंगोलिया मैत्री संधि और इसका महत्व' पर था। मंगोलिया और चीन के विशेषज्ञ शोध विद्वान डॉ. मियावाकी जुंको, केंद्रीय उच्च तिब्बती अध्ययन संस्थान, वाराणसी से प्रोफेसर जम्पा समतेन और ताइवान न्यू स्कूल फॉर डेमोक्रेसी के एम् एस् मैनटिंग हुआंग ने इस विषय पर बात की और अपने शोध- पत्र प्रस्तुत किए।

संगोष्ठी का दूसरा सत्र 'तिब्बत-मंगोलिया के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंध और इसका महत्व' विषय पर था। मंगोल विद्वान मिस्टर बाओयिंटु, टोक्यो विश्वविद्यालय के प्रो. हिरानो सातोशी और जापान स्थित तिब्बत हाउस के डॉ. आर्य छेवांग ग्याल्पो ने इस विषय पर बात की और अपने शोध-पत्र प्रस्तुत किए।

तीसरे सत्र में मंगोल विद्वान मिस्टर आर्का, तिब्बत नीति संस्थान के एम् एस् फेंटोक और ताइवान के न्यू स्कूल फॉर डेमोक्रेसी के श्री ज़ेंग जियान-युआन ने 'मंगोलिया और तिब्बत में वर्तमान स्थिति और भविष्य में राष्ट्रीय आंदोलन की एकजुटता की संभावना' विषय पर बात की और पेपर प्रस्तुत किए।'

विद्वानों की बातचीत और प्रस्तुतियों को दर्शकों ने खूब सराहा और प्रत्येक सत्र के अंत में प्रश्न और उत्तर में भाग लिया। टोक्यो विश्वविद्यालय की प्रोफेसर अको टोमोको ने अपने समापन भाषण में विश्वविद्यालय परिसर में एशिया के इतिहास के इस महत्वपूर्ण विषय पर विद्वानों की चर्चा और बहस पर संतोष व्यक्त किया।' आयोजकों की योजना विद्वानों के शोध-पत्रों को जापानी, अंग्रेजी और चीनी भाषा में प्रकाशित कराने की है। कई लोगों ने कई विद्वानों और आम जनता को संगोष्ठी में भाग लेते और एशियाई इतिहास के इस हिस्से में रुचि लेते हुए देखकर खुशी व्यक्त की।

कालोन नोरज़िन डोल्मा ने विद्वानों के साथ बातचीत की और उन्हें उनकी प्रस्तुतियों और शोध-पत्रों के लिए बधाई दी। कालोन कल जापान स्थित तिब्बत हाउस में जापान में रह रहे तिब्बतियों से मुलाकात करेंगे।

IMPORTANT NOTICE

Dear Readers,

Firstly, I would like to express my heartfelt appreciation for the overwhelming response and support that we have received from you since the launch of Tibbat Desh Magazine.
Tibbat Desh Magazine is the only monthly Hindi Magazine on current affairs of Tibet which includes news on teachings of His Holiness the Dalai Lama, Current grave situations inside Tibet, Events & activities in Exile and of the Tibetan Freedom movement across the globe.
You must be aware, for the past 2 years, we have been receiving complaints about delay and not obtaining the Tibbat Desh magazine on time to our readers. And also we found that many of our readers either have shifted or changed their existing postal address. Therefore to review the mailing address, we request you to assist us in providing the current postal address at the below mentioned address or email.
We would also request our readers to send their feedbacks and suggestions about the magazine.

Yours Sincerely,

Thupten Rinzin
Coordinator
India Tibet Coordination Office

आवश्यक सूचना

प्रिय पाठकों,

सबसे पहले में, आप सभी का बहुत अभार व्यक्त करता हूं कि जब से तिब्बत देश मासिक पत्रिका का विमोचन हुआ आप लोगों का निरंतर समर्थन एवं शानदर भागीदारी रहा है।
तिब्बत देश, तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका है, जो तिब्बत के भीतर हो रहे चीनी दमनकारी और क्रूर नीति तथा विश्व स्तर पर परमपावन दलाई लामा के मार्गदर्शन में तिब्बती आंदोलन के बारे में भारत के सरकार और लोगों में समर्थन एवं जानकारी उपलब्ध कराना है।
आप सभी को ज्ञात है कि, पिछले दो वर्षों से, हमारे पठकों का बहुत सारे शिकायतों हमारे इस कार्यलय में प्राप्त हुआ, जिनमें कई का यह कहना था कि उनको तिब्बत देश मिल नही रहा है। साथ ही हमें यह भी जानकारी मिली है कि बहुत सारे पठकों का पता एवं आवास बदल गया है या वहां से रवाना हो चुका है।
इसलिए हम इस पत्रिका का इस बार समीक्षा कर रहे है। और आप सभी से यह निवेदन करता हूं कि अगर आपको तिब्बत देश पत्रिका प्राप्त हो रहे है तो उसकी पुष्टी हमे तुरन्त देने की कष्ट करें। आप इसकी पुष्टी हमारे नीछे लिखे गये पता या ई–मेल पर भेज सकते है।
अतः तिब्बत देश पत्रिका के संदर्भ में अपना राय एवं सुझाव हमे समय समय पर भेजने की कष्ट करें।

सादर आपका

थुप्तेन रिन्ज़ीन
समन्वयक, भारत तिब्बत समन्वय केंद्र
नई दिल्ली

कार्यलय पता: भारत तिब्बत समन्वय केंद्र, एच–10, द्वितीय मंजील, लाजपत नगर–03, नई दिल्ली–110024
फोन: 011–29830578
ई–मेल: indiatibet7@gmail.com , coordinator@indiatibet.net

भारत में तिब्बत समर्थक समूहों ने परम पावन १४वें दलाई लामा की ८८वीं जयंती मनाई।